آيَاتُهَا ٣٥ ❀ سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ (٤٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकूआत 4	(46) सूरतुल अहक़ाफ़ रेगिस्तान	आयात 35

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

2	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह से	किताब	नाज़िल करना	1	हा-मीम

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	मगर	और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	नहीं पैदा किया हम ने

وَّاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

भला तुम देखो	फ़रमा दें	3	रूगर्दानी करने वाले	वह डराए जाते हैं	जिस से	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और एक मीआद मुक़र्ररा

مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ

ज़मीन से	उन्हों ने पैदा किया	क्या	दिखाओ मुझे तुम	अल्लाह के सिवा	जिन को तुम पुकारते हो

اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۭ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ

या	इस	से पहले	कोई किताब	ले आओ मेरे पास	आस्मानों में	कुछ साझा	उन के लिए	या

اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤﴾ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا

उस से जो वह पुकारता है	बड़ा गुमराह	और कौन	4	सच्चे	तुम हो	अगर	इल्म से-की	आसार

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ

से	और वह	क़ियामत का दिन	तक	उस को	जवाब न देगा	जो	अल्लाह के सिवा

دُعَاۗىِٕهِمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٥﴾ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَاۗءً

दुश्मन	उन के	वह होंगे	जमा किए जाएंगे लोग	और जब	5	बेख़बर हैं	उन का पुकारना

وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿٦﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

वाज़ेह	हमारी आयात	पढ़ी जाती हैं उन पर	और जब	6	मुन्किर (जमा)	उन की इबादत से	और वह होंगे

قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾

7	खुला	यह जादू	उन के पास आ गया वह	जब	हक़ का	जिन लोगों ने इन्कार किया	कहते हैं वह

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ

तो तुम इख़्तियार नहीं रखते	मैं ने ख़ुद बना लिया है इसे	अगर	फ़रमा दें	उस ने ख़ुद बना लिया है इसे	वह कहते हैं	क्या

لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ۭ كَفٰى بِهٖ

वह काफ़ी है इस का	इस में	तुम बातें बनाते हो	वह जो	वह ख़ूब जानता है	कुछ भी	अल्लाह से	मेरे लिए

شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۭ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٨﴾

8	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और वह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। (1)

किताब का नाज़िल करना ग़ालिब, हिक्मत वाले अल्लाह (की तरफ़) से है। (2)

हम ने नहीं पैदा किया है आस्मानों और ज़मीन को और जो उन दोनों के दरमियान है मगर हक़ के साथ और एक मुक़र्ररा मीआद (के लिए) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया जिस से वह डराए जाते हैं (उस से) रूगर्दानी करने वाले हैं। (3)

आप (स) फ़रमा दें भला तुम देखो (सोचो) तो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो मुझे दिखाओ कि उन्हों ने ज़मीन से क्या पैदा किया? या उन के लिए आस्मानों में कुछ साझा है? ले आओ मेरे पास इस से पहले की कोई किताब या कोई इल्मी आसार (निशानात) अगर तुम सच्चे हो। (4)

और उस से बड़ा गुमराह कौन है? जो अल्लाह के सिवा उस को पुकारता है जो उसे जवाब न देगा क़ियामत के दिन तक, और वह उन के पुकारने से (भी) बेख़बर हैं। (5)

और जब लोग (मैदाने हश्र) में जमा किए जाएंगे वह उन के दुश्मन होंगे और वह उन की इबादत के मुन्किर होंगे। (6)

और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती हैं तो वह कहते हैं जिन्हों ने इन्कार किया हक़ के बारे में जब कि वह उन के पास आ गया: यह खुला जादू है। (7)

क्या वह कहते हैं कि उस ने इसे ख़ुद बना लिया है, आप (स) फ़रमा दें: अगर मैं ने इसे ख़ुद बना लिया है तो तुम मुझे अल्लाह से (बचाने का) कुछ भी इख़्तियार नहीं रखते, वह ख़ूब जानता है जो तुम इस (के बारे) में बातें बनाते हो, वह काफ़ी है इस का गवाह मेरे और तुम्हारे दरमियान, और वह है बख़्शने वाला, रहम करने वाला। (8)

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِىْ مَا يُفْعَلُ بِىْ وَلَا بِكُمْ ط

और न तुम्हारे साथ	मेरे साथ	क्या किया जाएगा	और नहीं जानता मैं	रसूलों में से	नया	नहीं हूँ मैं	फ़रमा दें

اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

भला तुम देखो तो	फ़रमा दें	9	डर सुनाने वाला साफ़ साफ़	मगर-सिर्फ़	और नहीं हूँ मैं	मेरी तरफ़	जो वहि किया जाता है	सिवाए-सिर्फ़	नहीं पैरवी करता

اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ

से	एक गवाह	और गवाही दी	इस का	और तुम ने इन्कार किया	अल्लाह के पास से	है	अगर

بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

लोग	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	और तुम ने तकब्बुर किया	फिर वह ईमान ले आया	इस जैसी (एक किताब) पर	बनी इस्राईल

الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا ع ١

बेहतर	अगर होता	उन के लिए जो ईमान लाए (मोमिन)	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा	10	ज़ालिम (जमा)

مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ط وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ﴿١١﴾

11	पुराना	झूट	यह	तो अब कहेंगे	इस से	न हिदायत पाई उन्हों ने	और जब	इस की तरफ़	न वह पहल करते हम पर

وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ط وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ

तस्दीक़ करने वाली	किताब	और यह	और रहमत	रहनुमा-इमाम	मूसा (अ)	किताब	और इस से पहले

لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢﴾ اِنَّ

बेशक	12	नेकोकारों के लिए	और ख़ुशख़बरी	उन लोगों को जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	ताकि वह डराए	अ़रबी	ज़बान

الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

और न वह	उन पर	तो कोई ख़ौफ़ नहीं	वह क़ाइम रहे	फिर	हमारा रब अल्लाह	जिन लोगों ने कहा

يَحْزَنُوْنَ ﴿١٣﴾ ج اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ج جَزَآءً ۢ بِمَا

उस की जो	जज़ा	उस में	हमेशा रहेंगे	अहले जन्नत	यही लोग	13	ग़मगीन होंगे

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ط حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ

उस की माँ	वह उस को उठाए रही	हुस्ने सुलूक का	माँ बाप के साथ	इन्सान	और हम ने हुक्म दिया	14	वह अ़मल करते थे

كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ط وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ط حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ

वह पहुँचा	जब	यहां तक	तीस (30) महीने	और उस का दूध छुड़ाना	और उस का हम्ल	और उस ने उस को जना तक्लीफ़ के साथ	तक्लीफ़ के साथ

اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً لا قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِىْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ

तेरी नेमत	कि मैं शुक्र करूँ	तौफ़ीक़ दे मुझे	ऐ मेरे रब	उस ने अ़र्ज़ की	साल	चालीस (40)	और वह पहुँचा (हुआ)	अपने ज़ोर (जवानी) को

الَّتِىْٓ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ وَعَلٰى وَالِدَىَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ

तू पसंद करे उसे	नेक अ़मल	और यह कि मैं अ़मल करूँ	और मेरे माँ बाप पर	तू ने इन्आ़म फ़रमाई मुझ पर	वह जो

وَاَصْلِحْ لِىْ فِىْ ذُرِّيَّتِىْ ج اِنِّىْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّىْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٥﴾

15	मुसलमानों (फ़रमांबरदारों)	से	और बेशक मैं	तेरी तरफ़	बेशक मैं ने तौबा की	मेरी औलाद में	मेरे लिए	और इस्लाह कर दे

आप (स) फ़रमा दें कि मैं रसूलों में नया नहीं हूँ, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा, मैं सिर्फ़ उस की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, और मैं सिर्फ़ साफ़ साफ़ डर सुनाने वाला हूँ। (9) आप (स) फ़रमा दें: भला तुम देखो तो अगर (यह क़ुरआन) अल्लाह के पास से है, और तुम ने इस का इन्कार किया, और गवाही दी एक गवाह ने बनी इस्राईल में से उस जैसी किताब पर, और वह ईमान ले आया, और तुम ने तकब्बुर किया (तुम अड़े रहे), बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। (10) और काफ़िरों ने मोमिनों के लिए (के बारे में) कहा: अगर (यह) बेहतर होता तो वह इस की तरफ़ हम पर पहल न करते, और जब उन्हों ने इस से हिदायत न पाई तो अब कहेंगे: यह पुराना झूट है। (11) और इस से पहले मूसा (अ) की किताब (तौरेत) थी रहनुमा और रहमत, और है यह किताब (उस की) तस्दीक़ करने वाली अ़रबी ज़बान में ताकि ज़ालिमों को डराए, और ख़ुशख़बरी है नेकोकारों के लिए। (12) बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर वह (उस पर) क़ाइम रहे, तो कोई ख़ौफ़ नहीं उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (13) यही लोग अहले जन्नत हैं, हमेशा उस में रहेंगे, (यह) उन की जज़ा है जो वह अ़मल करते थे। (14) और हम ने इन्सान को माँ बाप के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया, उस की माँ उसे तक्लीफ़ के साथ (पेट में) उठाए रही और उस ने उसे तक्लीफ़ के साथ जना, और उस का हम्ल और उस का दूध छुड़ाना 30 महीने में (हुआ) यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुँचा और हुआ चालीस (40) साल का तो उस ने अ़र्ज़ की: ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र करूँ जो तू ने मुझ पर इन्आ़म फ़रमाई और मेरे माँ बाप पर, और यह कि मैं नेक अ़मल करूँ जिसे तू पसंद करे, और मेरे लिए मेरी औलाद में इस्लाह कर दे (नेक बना दे), बेशक मैं ने तेरी तरफ़ (तेरे हुज़ूर) तौबा की और बेशक मैं फ़रमांबरदारों में से हूँ। (15)

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ

उन की बुराइयां	से	और हम दरगुज़र करते हैं	उन्हों ने किए	जो	बेहतरीन (अ़मल)	उन से	हम कुबूल करते हैं	वह जो कि	यही लोग

فِيْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْ

और वह जिस	16	उन्हें वादा दिया जाता था	वह जो	सच्चा वादा	अहले जन्नत	में

قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَآ اَتَعِدٰنِنِيْٓ اَنْ اُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ

(बहुत से) गिरोह	हालांकि गुज़र चुके	मैं निकाला जाऊँगा	क्या तुम मुझे वादा (ख़बर) देते हो	तुम्हारे लिए-पर	तुफ़	अपने माँ बाप के लिए	उस ने कहा

مِنْ قَبْلِيْ ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ وَيْلَكَ اٰمِنْ ۖ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ

सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	तू ईमान ले आ	तेरा बुरा हो	फ़र्याद करते हैं अल्लाह से	और वह दोनों	मुझ से पहले

فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ

उन पर	साबित हो गई	वह जो	यही लोग	17	पहलों	कहानियां	मगर-सिर्फ़	यह	नहीं	तो वह कहता है

الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ

बेशक वह	जिन्नात और इन्सान (जमा)	से	इन से क़ब्ल	गुज़र चुकीं	उम्मतों में	बात (अ़ज़ाब)

كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿١٨﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ

उन के आमाल	और ताकि वह पूरा दे उन को	उस से जो उन्हों ने किया	दरजे	और हर एक के लिए	18	ख़सारा पाने वाले	थे

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ

आग के सामने	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	लाए जाएंगे	और जिस दिन	19	उन पर न ज़ुल्म किया जाएगा	और वह-उन

اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ

पस आज	उन का	और तुम फ़ाइदा उठा चुके	अपनी दुनिया की ज़िन्दगी	में	अपनी नेमतें	तुम ले गए (हासिल कर चुके)

تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ

तुम तकब्बुर करते थे	इस लिए कि	रुस्वाई का अ़ज़ाब	नहीं बदला दिया जाएगा

ع ٢ ١٠ ٢ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَاذْكُرْ

और याद कर	20	तुम नाफ़रमानियां करते थे	और इस लिए कि	नाहक़	ज़मीन में

اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ

डराने वाले	और गुज़र चुके	अहक़ाफ़ में	अपनी क़ौम	उस ने डराया	जब	आ़द के भाई

مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّيْٓ اَخَافُ

बेशक मैं डरता हूँ	अल्लाह के सिवा	कि तुम इबादत न करो	और उस के बाद	उस से पहले

عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٢١﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا

क्या तू हमारे पास आया कि तू फेर दे हमें	वह बोले	21	एक बड़ा दिन	अ़ज़ाब	तुम पर

عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٢﴾

22	सच्चे (जमा)	से	तू है	अगर	जो कुछ तू वादा करता है हम से	पस ले आ हम पर	हमारे माबूद	से

यही वह लोग हैं जिन के बेहतरीन अ़मल हम क़ुबूल करते हैं जो उन्हों ने किए और हम उन की बुराइयों से दरगुज़र करते हैं, (यह) अहले जन्नत में से (होंगे), सच्चा वादा है जो उन्हें वादा दिया जाता था। **(16)** और जिस ने अपने माँ बाप के लिए कहा: तुम पर तुफ़! क्या तुम मुझे यह ख़बर देते हो कि मैं (रोज़े हश्र) निकाला जाऊँगा, हालांकि बहुत से गिरोह गुज़र चुके हैं मुझ से पहले, और वह दोनों अल्लाह से फ़र्याद करते हैं (और उस को कहते हैं): तेरा बुरा हो, तू ईमान ले आ, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तो वह कहता है कि यह तो सिर्फ़ पहलों (अगलों) की कहानियां हैं। **(17)** यही लोग हैं जिन पर अ़ज़ाब की बात साबित हो गई (उन) उम्मतों में जो इन से क़ब्ल गुज़र चुकीं जिन्नात में से और इन्सानों में से, बेशक वह ख़सारा पाने वालों में से थे। **(18)** और हर एक के लिए दरजे हैं, उस (के मुताबिक़) जो उन्हों ने किया ताकि वह उन को उन के आमाल का पूरा (बदला) दे, और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। **(19)** और जिस दिन लाए जाएंगे काफ़िर आग के सामने (उन से कहा जाएगा): तुम अपनी नेमतें अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में हासिल कर चुके हो और उन का फ़ाइदा (भी) उठा चुके हो, पस आज तुम्हें रुस्वाई के अ़ज़ाब का बदला दिया जाएगा, इस लिए कि तुम ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते थे, और इस लिए कि तुम नाफ़रमानियां करते थे। **(20)** और क़ौमे आ़द के भाई (हूद) को याद कर, जब उस ने अपनी क़ौम को (सर ज़मीने) अहक़ाफ़ में डराया, और गुज़र चुके हैं डराने वाले (नबी) उस से पहले और उस के बाद (भी) कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, बेशक मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से। **(21)** वह बोले: क्या तू हमारे पास इस लिए आया कि हमें हमारे माबूदों से फेर दे, पस तू जो कुछ हम से वादा करता है हम पर ले आ अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। **(22)**

قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ

और लेकिन मैं	जो मैं भेजा गया हूँ उस के साथ	और मैं पहुँचाता हूँ तुम्हें	अल्लाह के पास	इल्म	इस के सिवा नहीं	उस ने कहा

اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ

उन की वादियां	सामने (चला) आ रहा है	एक अब्र	फिर जब देखा उन्हों ने उस को	23	तुम जहालत करते हो	गिरोह-लोग	देखता हूँ तुम्हें

قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۭ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ۭ

उस की	तुम जल्दी करते थे	जिस	बल्कि वह	हम पर बारिश बरसाने वाला	एक बादल	यह	वह बोले

رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٤﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۢ بِاَمْرِ رَبِّهَا

अपना रब	हुक्म से	शै	हर	वह तहस नहस कर देगी	24	दर्दनाक अ़ज़ाब	उस में	एक हवा (आन्धी)

فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي

हम बदला देते हैं	इसी तरह	उन के मकान	सिवाए	न दिखाई देता था	पस वह रह गए

الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ

उस में-पर	नहीं हम ने कुदरत दी तुम्हें	उस में	और अलबत्ता हम ने उनको कुदरत दी थी	25	मुज्रिम लोग

وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ڮ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ

काम आए उन के	तो न	और दिल (जमा)	और आँखें	कान	उन्हें	और हम ने बना दिए

سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ

जब	कुछ भी	और न दिल उन के	और न उन की आँखें	उन के कान

كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ

उस का	जो वह थे	उन को	और उस ने घेर लिया	अल्लाह की आयात का	वह इन्कार करते थे

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٢٦﴾ ع وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى ٣ ع ٦ ٣

बस्तियां	से	जो तुम्हारे इर्द गिर्द	और तहक़ीक़ हम ने हलाक कर दिया	26	वह मज़ाक़ उड़ाते

وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ

मदद की उन की	फिर क्यों न	27	लौट आईं	ताकि वह	और हम ने बार बार दिखाईं अपनी निशानियां

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۭ بَلْ

बल्कि	माबूद	कुर्ब हासिल करने को	अल्लाह के सिवा	जिन्हें बना लिया उन्हों ने

ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَاِذْ صَرَفْنَآ

हम फेर लाए	और जब	28	वह इफ़्तिरा करते थे	और जो	उन का बुहतान	और यह	वह गुम (ग़ाइब) हो गए उन से

اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ

वह हाज़िर हुए उस के पास	पस जब	क़ुरआन	वह सुनते थे	जिन्नात की	एक जमाअ़त	आप (स) की तरफ़

قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٢٩﴾

29	डर सुनाते हुए	अपनी क़ौम	तरफ़	वह लौटे	(पढ़ना) तमाम हुआ	फिर जब	चुप रहो	उन्हों ने कहा

उस ने कहाः इस के सिवा नहीं कि इल्म अल्लाह के पास है और मैं जिस (पैग़ाम) के साथ भेजा गया हूँ वह तुम्हें पहुँचाता हूँ, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग जहालत करते हो। **(23)**
फिर जब उन्हों ने उस को देखा कि एक अब्र उन की वादियों की तरफ़ चला आ रहा है, तो वह बोलेः यह हम पर बारिश बरसाने वाला बादल है, (नहीं) बल्कि यह वह है जिस की तुम जल्दी करते थे, एक आन्धी जिस में दर्दनाक अ़ज़ाब है। **(24)**
वह तहस नहस कर देगी हर शै को अपने रब के हुक्म से, पस (उन का यह हाल होगया कि) उन के मकानों के सिवा कुछ न दिखाई देता था, इसी तरह हम मुज्रिम लोगों को बदला दिया करते हैं। **(25)**
और हम ने उन्हें उन (बातों) में इस क़द्र कुदरत दी थी कि तुम्हें उस पर उस क़द्र कुदरत नहीं दी, और हम ने उन को दिए कान और आँखें और दिल, पस न उन के कान और न उन की आँखें और न उन के दिल उन के कुछ भी काम आए, जब वह इन्कार करते थे अल्लाह की आयात का, और उन को उस (अ़ज़ाब) ने घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। **(26)**
और तहक़ीक़ हम ने हलाक कर दीं तुम्हारे इर्द गिर्द की बस्तियां, और हम ने बार बार अपनी निशानियां दिखाईं ताकि वह लौट आएं। **(27)**
फिर क्यों न उन की मदद की उन्हों ने जिन्हें बना लिया था (अल्लाह का) कुर्ब हासिल करने के लिए अल्लाह के सिवा माबूद, बल्कि वह उन से ग़ाइब हो गए, और यह उन का बुहतान था जो वह इफ़्तिरा करते (घड़ते थे)। **(28)**
और जब हम आप (स) की तरफ़ जिन्नात की एक जमाअ़त फेर लाए, वह कुरआन सुनते थे, पस वह आप (स) के पास हाज़िर हुए तो उन्हों ने (एक दूसरे को) कहाः चुप रहो, फिर जब पढ़ना तमाम हुआ तो वह अपनी क़ौम की तरफ़ डर सुनाते हुए लौटे। **(29)**

قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا

उन्हों ने कहा	ऐ हमारी क़ौम	बेशक हम ने सुनी	एक किताब	नाज़िल की गई	बाद	मूसा (अ)	तस्दीक़ करने वाली

لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْۤ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٠﴾ يٰقَوْمَنَآ

उस की जो	उस (अपने) से पहले	वह रहनुमाई करती है	हक़ की तरफ़	और तरफ़	राह	रास्त	30	ऐ हमारी क़ौम

اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ

क़ुबूल कर लो	अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला	और ईमान ले आओ	उस पर	बख़्श देगा तुम्हें	से	तुम्हारे गुनाह	और वह पनाह देगा तुम्हें

مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾ وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ

से	दर्दनाक अज़ाब	31	और जो	न क़ुबूल करेगा	अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला	तो नहीं	आजिज़ करने वाला

فِى الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾

ज़मीन में	और नहीं	उस के लिए	उस के सिवा	हिमायती	यही लोग	में	गुमराही खुली	32

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْىَ

क्या नहीं देखा उन्हों ने	कि अल्लाह	वह जिस ने	पैदा किया आस्मानों को	और ज़मीन	और वह थका नहीं

بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْیِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰۤى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

उन के पैदा करने से	वह क़ादिर है	पर	कि वह ज़िन्दा करे	मुर्दे	हाँ	बेशक वह	पर	हर शै	क़ुदरत रखने वाला	33

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا

और जिस दिन	पेश किए जाएंगे	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	आग के सामने	क्या नहीं	यह	हक़	वह कहेंगे

بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ

हाँ	हमारे रब की क़सम	वह फ़रमाएगा	पस तुम चखो	अज़ाब	वह जिस	तुम इन्कार करते थे	34	पस आप (स) सब्र करें

كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ

जैसे	सब्र किया	ऊलुल अज़्म	से	रसूलों	और जल्दी न करें	उन के लिए	गोया कि वह

يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ

जिस दिन देखेंगे वह	जिस का वादा किया जाता है उन से	वह नहीं ठहरे	मगर-सिर्फ़	एक घड़ी	दिन की

ع ٩ ٤
بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

पहुँचाना	पस नहीं हलाक होंगे	मगर	नाफ़रमान लोग	35

اٰيَاتُهَا ٣٨ ❀ (٤٧) سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

आयात 38 — (47) सूरह मुहम्मद — रुकूआत 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿١﴾

जो लोग	काफ़िर हुए	और उन्हों ने रोका	से	अल्लाह का रास्ता	अकारत कर दिए	उन के आमाल	1

उन्हों ने कहा कि ऐ हमारी क़ौम! हम ने एक किताब सुनी है जो नाज़िल की गई है मूसा (अ) के बाद, अपने से पहले की तस्दीक़ करने वाली, वह रहनुमाई करने वाली (दीने) हक़ की तरफ़ और राहे रास्त की तरफ़। (30) ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले (की बात) क़ुबूल कर लो और उस पर ईमान ले आओ, (अल्लाह) तुम्हें तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और वह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से पनाह देगा। (31) और जो अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की बात को क़ुबूल न करेगा, वह ज़मीन में (अल्लाह को) आजिज़ करने वाला नहीं, और उस (अल्लाह) के सिवा उस के लिए कोई हिमायती नहीं, यही लोग खुली गुमराही में हैं। (32) क्या उन्हों ने नहीं देखा? कि अल्लाह ही है जिस ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया, और वह उन के पैदा करने से नहीं थका, वह उस पर क़ादिर है कि मुर्दों को ज़िन्दा करे, हाँ! बेशक वह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (33) और जिस दिन काफ़िर आग (जहन्नम) के सामने पेश किए जाएंगे, (पूछा जाएगा) क्या यह हक़ (अम्रे वाक़ई) नहीं? वह कहेंगेः हमारे रब की क़सम, हाँ (यह हक़ है), अल्लाह तआला फ़रमाएगाः पस तुम अज़ाब चखो जिस का तुम इन्कार करते थे। (34) पस आप (स) सब्र करें जैसे ऊलुलअज़्म (बाहिम्मत) रसूलों ने सब्र किया, और उन के लिए (अज़ाब की) जल्दी न करें, वह जिस दिन देखेंगे (वह अज़ाब) जिस का उन से वादा किया जाता है (उन्हें ऐसा मालूम होगा कि) गोया वह दुनिया में सिर्फ़ दिन की एक घड़ी ठहरे थे, (पैग़ाम) पहुँचाना है, पस हलाक न होंगे मगर नाफ़रमान लोग। (35)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

जो लोग काफ़िर हुए और उन्हों ने अल्लाह के रास्ते से रोका, उन के आमाल (अल्लाह ने) अकारत कर दिए। (1)

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

मुहम्मद (स) पर	उस पर जो नाज़िल किया गया	और वह ईमान लाए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	और जो लोग

وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿٢﴾

2	उन का हाल	और दुरुस्त कर दिया	उन की बुराइयां (गुनाह)	उन से	उस ने दूर कर दिए	उन का रब	से	हक़	और वह

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا

ईमान लाए	जो लोग	और यह कि	बातिल	उन्हों ने पैरवी की	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	यह इस लिए कि

اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ﴿٣﴾

3	उन की मिसालें	लोगों के लिए	अल्लाह बयान करता है	इसी तरह	अपने रब (की तरफ़) से	हक़	उन्हों ने पैरवी की

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ

खूब खून रेज़ी कर चुको उन की	जब	यहां तक कि	गर्दनें	तो मारो तुम	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	भिड़ जाओ	फिर जब तुम

فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّاۢ بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ

रख दे लड़ाई (लड़ने वाले)	यहां तक कि	मुआवज़ा	और या	उस के बाद	एहसान करो	पस या	क़ैद	तो मज़बूत कर लो

اَوْزَارَهَا ۛۚ ذٰلِكَ ۛؕ وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا

ताकि आज़माए	और लेकिन	उन से	ज़रूर इन्तिक़ाम लेता	अल्लाह चाहता	और अगर	यह	अपने हथियार

بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾

4	उन के आमाल	तो वह हरगिज़ ज़ाया न करेगा	अल्लाह का रास्ता	में	मारे गए	और जो लोग	बाज़ (दूसरे) से	तुम से बाज़ को

سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿٥﴾ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿٦﴾

6	उस ने जिस से शनासा कर दिया है उन्हें	जन्नत	और दाखि़ल करेगा उन्हें	5	उन का हाल	और संवारेगा	वह जल्द उन को हिदायत देगा

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ

और जमा देगा	वह मदद करेगा तुम्हारी	तुम मदद करोगे अल्लाह की	अगर	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

اَقْدَامَكُمْ ﴿٧﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٨﴾

8	उन के अ़मल	और उस ने ज़ाया कर दिए	उन के लिए	तो तबाही है	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	7	तुम्हारे क़दम

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾

9	उन के अ़मल	तो अकारत कर दिए	नाज़िल किया अल्लाह ने	जो	इस लिए कि उन्हों ने नापसंद किया	यह

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

उन लोगों का जो	अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देख लेते	ज़मीन में	क्या वह चले फिरे नहीं

مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ﴿١٠﴾ ذٰلِكَ

यह	10	उन की मानिंद	और काफ़िरों के लिए	उन पर	तबाही डाल दी अल्लाह ने	उन से पहले

بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ﴿١١﴾ ع

11	उन के लिए	कोई कारसाज़ नहीं	काफ़िरों	और यह कि	उन लोगों का जो ईमान लाए	कारसाज़	इस लिए कि अल्लाह

صح ١٣ عدد المتقدمين ١٢

وقد يبتدا بقوله ذٰلِكَ ولكن حسن اتصاله بما قبله ويوقف على ذٰلِكَ ١٢

ع ١١ ٥

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए और वह उस पर ईमान लाए जो मुहम्मद (स) पर नाज़िल किया गया, और वह उन के रब की तरफ़ से हक़ है, उस (अल्लाह) ने उन से उन के गुनाह दूर कर दिए और उन का हाल दुरुस्त कर दिया। (2)
यह इस लिए हुआ कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हों ने बातिल की पैरवी की और यह कि जो लोग ईमान लाए, उन्हों ने अपने रब की तरफ़ से हक़ की पैरवी की, इसी तरह अल्लाह लोगों के लिए उन की मिसालें (अहवाल) बयान करता है। (3)
फिर जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ तो उन की गर्दनें मारो, यहां तक कि जब उन की खूब खूं रेज़ी कर चुको तो उन की क़ैद मज़बूत कर लो (मुशकें कस लो), पस उस के बाद एहसान कर दो (बिला मुआवज़ा रिहा कर दो) या मुआवज़ा (ले कर छोड़ दो) यहां तक कि लड़ने वाले अपने हथियार रख दें (डाल दें), यह है (हुक्मे इलाही), और अगर अल्लाह चाहता तो उन से खुद ही निपट लेता, लेकिन (वह चाहता है) कि तुम में से बाज़ (एक) को दूसरे से आज़माए, और जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे गए तो वह उन के आमाल हरगिज़ ज़ाया न करेगा। (4)
वह जल्द उन को हिदायत देगा और उन का हाल संवारेगा। (5)
और वह उन्हें जन्नत में दाखि़ल करेगा जिस से उस ने उन्हें शनासा कर दिया है। (6)
ऐ मोमिनो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा (तुम्हें साबित क़दम कर देगा)। (7)
और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए तबाही है और उस (अल्लाह) ने उन के अ़मल ज़ाया कर दिए। (8)
यह इस लिए कि उन्हों ने उसे नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो (अल्लाह) ने उन के अ़मल अकारत कर दिए। (9)
क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देख लेते कि कैसा अन्जाम हुआ उन से पहले लोगों का, अल्लाह ने उन पर तबाही डाल दी, और काफ़िरों को उन की मानिंद (सज़ा होगी)। (10)
यह इस लिए कि अल्लाह उन लोगों का कारसाज़ है जो ईमान लाए और काफ़िरों का कोई कारसाज़ नहीं। (11)

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ

बहती हैं	बाग़ात	और उन्हों ने नेक अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	दाख़िल करता है	बेशक अल्लाह

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا

जैसे	और वह खाते हैं	वह फ़ाइदा उठाते हैं	कुफ़्र किया	और जिन लोगों ने	नहरें	उन के नीचे

تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ﴿١٢﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِىَ اَشَدُّ

बहुत ही सख़्त	वह	बस्तियां	और बहुत सी	12	उन के लिए	ठिकाना	और आग	चौपाए	खाते हैं

قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِىْٓ اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾

13	उन के लिए	तो कोई न मदद करने वाला	हम ने हलाक कर दिया उन्हें	आप (स) को निकाल दिया	वह जिस	आप (स) की बस्ती से	कुव्वत में

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ

उस के बुरे अ़मल	आरास्ता दिखाए गए उसको	उस की तरह	अपने रब से-के	रोशन (रास्ता)	पर	है	पस क्या जो

وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَاۗءَهُمْ ﴿١٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِىْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ فِيْهَآ

उस में	परहेज़गारों	वह जो वादा की गई	जन्नत	मिसाल (कैफ़ियत)	14	अपनी ख़ाहिशात	और उन्हों ने पैरवी की

اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّاۗءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ

और नहरें	उस का ज़ाइक़ा	बदलने वाला	न	दूध की	और नहरें	बदबू न करने वाला	पानी	से-की	नहरें

مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ڬ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۭ وَلَهُمْ فِيْهَا

उस में	और उन के लिए	मुसफ़्फ़ा	शहद की	और नहरें	पीने वालों के लिए	सरासर लज़्ज़त	शराब की

مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِى النَّارِ

हमेशा रहने वाला आग में	वह	उस की तरह जो	उन के रब से	और बख़्शिश	हर क़िस्म के फल

وَسُقُوْا مَاۗءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَاۗءَهُمْ ﴿١٥﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ

सुनते हैं	जो	और उन में से	15	उन की अंतड़ियां	टुकड़े टुकड़े कर डालेगा	गर्म पानी	और उन्हें पिलाया जाएगा

اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

इल्म दिया गया (अहले इल्म)	उन लोगों से जिन्हें	वह कहते हैं	आप (स) के पास से	वह निकलते हैं	जब	यहां तक कि	आप (स) की तरफ़

مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۣ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

उन के दिलों पर	मुहर कर दी अल्लाह ने	वह जो	यही लोग	अभी	उस ने कहा	क्या

وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَاۗءَهُمْ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ

और उन्हें अ़ता की	हिदायत	और ज़ियादा दी उन्हें	और वह लोग जिन्हों ने हिदायत पाई	16	अपनी ख़ाहिशात	और उन्हों ने पैरवी की

تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ

अचानक	आ जाए उन पर	कि	क़ियामत	मगर	मुन्तज़िर	पस नहीं वह	17	उन की परहेज़गारी

فَقَدْ جَاۗءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَاۗءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٨﴾

18	उन का नसीहत (क़ुबूल करना)	वह आगई उन के पास	जब	उन के लिए-को	तो कहां	उस की अ़लामात	सो आ चुकी हैं

बेशक अल्लाह दाख़िल करता है उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए बाग़ात में जिन के नीचे नहरें बहती हैं, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह फ़ाइदा उठाते हैं और (उसी तरह) खाते हैं जैसे चौपाए खाते हैं, और आग (जहन्नम) उन का ठिकाना है। (12)
और बहुत सी बस्तियां (थीं), वह बहुत ही सख़्त थीं कुव्वत में आप (स) की बस्ती से जिस के रहने वालों ने आप (स) को निकाल दिया, हम ने उन्हें हलाक कर दिया तो कोई उन की मदद करने वाला न हुआ। (13)
पस क्या जो अपने परवरदिगार के रोशन रास्ते पर हो उस की तरह है जिसे उस के बुरे अ़मल आरास्ता कर दिखाए गए, और उन्हों ने अपनी ख़ाहिशात की पैरवी की। (14)
जन्नत की कैफ़ियत जो परहेज़गारों को वादा की गई, (यह है) कि उस में नहरें हैं बदबू न करने वाले पानी की, नहरें हैं दूध की जिस का ज़ाइक़ा बदलने वाला नहीं, और नहरें हैं शराब की जो पीने वालों के लिए सरासर लज़्ज़त है, और नहरें हैं मुसफ़्फ़ा (साफ़ किए हुए) शहद की, और उस में उन के लिए हर क़िस्म के फल हैं, और उन के रब (की तरफ़ से) बख़्शिश, (क्या वह) उस की तरह है? जो हमेशा आग में रहने वाला है, और उन्हें गर्म (खौलता हुआ) पानी पिलाया जाएगा जो उन की अंतड़ियां टुकड़े टुकड़े कर देगा। (15)
और उन में से बाज़ ऐसे हैं जो आप (स) की तरफ़ (कान लगा कर) सुनते हैं, फिर जब वह आप (स) के पास से निकलते हैं तो वह अहले इल्म से कहते हैं कि उस (हज़रत स) ने अभी क्या कहा है? यही वह लोग हैं जिन के दिलों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है, और उन्हों ने अपनी ख़ाहिशात की पैरवी की। (16)
और जिन लोगों ने हिदायत पाई (अल्लाह ने) उन्हें और ज़ियादा हिदायत दी और उन्हें अ़ता की उन की परहेज़गारी। (17)
पस वह मुन्तज़िर नहीं मगर क़ियामत (की आमद) के, कि उन पर अचानक आ जाए, सो उस की अ़लामात तो आ चुकी हैं, जब वह उन के पास आ गई तो उन्हें नसीहत क़ुबूल करना कहां (नसीब) होगा। (18)

فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

और मोमिन मर्दों के लिए	अपने कुसूर के लिए	और बख़्शिश मांगें आप (स)	अल्लाह के सिवा	नहीं कोई माबूद	यह कि	सो जान लो

وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ؑ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ٢ ع ٨ ٦

वह जो लोग ईमान लाए	और वह कहते हैं	19	और तुम्हारे रहने सहने का मुक़ाम	तुम्हारा चलना फिरना	जानता है	और अल्लाह	और मोमिन औरतों

لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا

उस में	और ज़िक्र किया जाता है	फ़ैसला कुन सूरत	उतारी जाती है	सो जब	एक सूरत	क्यों न उतारी गई

الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ

देखना	आप (स) की तरफ़	वह देखते हैं	बीमारी	उन के दिलों में	वह लोग	तुम देखोगे	जंग

الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۟ قف

मअ़रूफ़	और बात	इताअ़त	20	सो ख़राबी उन के लिए	मौत की	उस पर	बेहोशी तारी हो गई

فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۟ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ

सो तुम इस के नज़्दीक	21	अलबत्ता होता बेहतर उन के लिए	पस अगर वह सच्चे होते अल्लाह के साथ	पुख़्ता हो जाए काम	फिर जब

اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾

22	अपने रिश्ते	और तुम काटो (तोड़ डालो)	ज़मीन में	कि तुम फ़साद मचाओ	तुम वाली (हाकिम) हो जाओ	अगर

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

23	उन की आँखें	और अन्धा कर दिया	फिर उन को बहरा कर दिया	अल्लाह ने लानत की	वह लोग जिन पर	यही हैं

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا

पलट गए	जो लोग	बेशक	24	उन के ताले	दिलों पर	क्या	कुरआन	तो क्या वह ग़ौर नहीं करते?

عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ؕ

उन के लिए	आरास्ता कर दिखाया	शैतान	हिदायत	उन के लिए	जब वाज़ेह हो गई	इस के बाद	अपनी पुश्त पर

وَاَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ

अ़नक़रीब हम तुम्हारा कहा मान लेंगे	जो नाज़िल किया अल्लाह ने	उन्हों ने नापसंद किया	उन लोगों से जिन्हों	उन्हों ने कहा	इस लिए कि वह	यह	25	उन को	और ढील दी गई

فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ

जब उन की रूह क़ब्ज़ करेंगे	पस क्या	26	उन की ख़ुफ़िया बातें	जानता है	और अल्लाह	काम	बाज़	में

الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا

पैरवी की	यह इस लिए कि उन्हों ने	27	और उन की पीठों	उन के चेहरों	वह मारते होंगे	फ़रिश्ते

مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ اَمْ حَسِبَ ٣ ع ٩ ٧

क्या गुमान करते हैं?	28	उन के आमाल	तो उस ने अकारत कर दिए	उस की रज़ा	और उन्हों ने पसंद न किया	अल्लाह को नाराज़ किया	जो-जिस

الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾

29	उन के दिल की अ़दावतें	हरगिज़ ज़ाहिर न करेगा अल्लाह	कि	मरज़-रोग	उन के दिलों में	(वह लोग) जिन

सो जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप (स) बख़्शिश मांगें अपने कुसूरों के लिए, मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए, और अल्लाह जानता है तुम्हारा चलना फिरना, और तुम्हारे रहने सहने के मुक़ाम को। **(19)** और जो लोग ईमान लाए वह कहते हैं कि (जिहाद की) एक सूरत क्यों न उतारी गई? सो जब मुहक्कम (साफ़ साफ़ मतलब वाली) सूरत उतारी जाती है और ज़िक्र किया जाता है उस में जंग का, तो तुम देखोगे कि वह लोग जिन के दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है, वह आप (स) की तरफ़ देखते हैं (उस शख़्स के) देखने की तरह बेहोशी तारी हो गई हो जिस पर मौत की, सो ख़राबी है उन के लिए। **(20)** (सहीह तो यह था कि वह) इताअ़त करते और माकूल बात कहते, पस जब काम पुख़्ता होजाए, अगर वह अल्लाह के साथ सच्चे होते तो अलबत्ता उन के लिए बेहतर होता। **(21)** सो तुम इस के नज़्दीक हो कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो तुम फ़साद मचाओ ज़मीन में, और अपने रिश्ते तोड़ डालो। **(22)** यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, फिर उन्हें बहरा कर दिया और अन्धा कर दिया उन की आँखों को। **(23)** तो क्या वह कुरआन में ग़ौर नहीं करते? क्या उन के दिलों पर ताले (पड़े हैं)? **(24)** बेशक जो लोग अपनी पुश्त फेर कर पलट गए उस के बाद जब कि उन के लिए हिदायत वाज़ेह हो गई, शैतान ने उन के लिए आरास्ता कर दिखाया और उन को ढील दी। **(25)** यह इस लिए कि उन्हों ने उन लोगों से कहा जिन्हों ने इस (किताब) को नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल की कि अ़नक़रीब हम तुम्हारा कहना मान लेंगे बाज़ कामों (बातों) में, और अल्लाह उन की ख़ुफ़िया बातों को जानता है। **(26)** पस कैसा (हाल होगा)? जब फ़रिश्ते उन की रूह क़ब्ज़ करेंगे (और) मारते होंगे उन के चेहरों और उन की पीठों पर। **(27)** यह इस लिए होगा कि उन्हों ने उस की पैरवी की जिस ने अल्लाह को नाराज़ किया और उन्हों ने उस की रज़ा को नापसंद किया तो उस (अल्लाह) ने उन के आमाल अकारत कर दिए। **(28)** क्या जिन लोगों के दिलों में रोग है वह गुमान करते हैं कि अल्लाह हरगिज़ ज़ाहिर न करेगा उन की दिली अदावतों को। **(29)**

وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۗ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ

में-से	और तुम ज़रूर पहचान लोगे उन्हें	उन के चेहरों से	सो अलबत्ता तुम उन्हें पहचान लो	तो तुम्हें दिखा दें वह लोग	और अगर हम चाहें

لَحْنِ الْقَوْلِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ

मुजाहिदों	हम मालूम कर लें	यहां तक कि	और हम ज़रूर आज़माएंगे तुम्हें	30	तुम्हारे आमाल	जानता है	और अल्लाह	तरज़े कलाम

مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۟ اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	31	तुम्हारी ख़बरें (हालात)	और हम जाँच लें	और सब्र करने वाले	तुम में से

وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	रसूल	और उन्हों ने मुख़ालिफ़त की	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्हों ने रोका

مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْئًا ۗ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾

32	उन के आमाल	और वह जल्द अकारत कर देगा	कुछ भी	और वह हरगिज़ न बिगाड़ सकेंगे अल्लाह का	हिदायत	उन पर	जब वाज़ेह हो गई

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْۤا

और बातिल न करो	और इताअ़त करो रसूल की	इताअ़त करो अल्लाह की	जो लोग ईमान लाए (मोमिनो)	ऐ

اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ

फिर	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्हों ने रोका	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	33	अपने आमाल

مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى

तरफ़	और न बुलाओ	पस तुम सुस्ती न करो	34	उन को	तो हरगिज़ नहीं बख़्शेगा अल्लाह	काफ़िर (ही)	और वह	मर गए

السَّلْمِ ۖ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾

35	तुम्हारे आमाल	और वह हरगिज़ कमी न करेगा	तुम्हारे साथ	और अल्लाह	ग़ालिब	और तुम ही	सुलह

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۗ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ

वह तुम्हें देगा	और तक़्वा इख़्तियार करो	ईमान ले आओ	और अगर	और कूद	खेल	दुनिया की ज़िन्दगी	इस के सिवा नहीं

اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا

तुम बुख़्ल करो	फिर तुम से चिमट जाए	वह तुम से (माल) तलब करे	अगर	36	तुम्हारे माल	और न तलब करेगा तुम से	तुम्हारे अजर (जमा)

وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ

में	कि तुम ख़र्च करो	तुम्हें पुकारा जाता है	हाँ! वह लोग	यह तुम हो	37	तुम्हारे खोट	और ज़ाहिर हो जाएं

سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۗ

अपने आप से	तो इस के सिवा नहीं कि वह बुख़्ल करता है	बुख़्ल करता है	और जो	कोई ऐसा है कि बुख़्ल करता है	फिर तुम में से	अल्लाह का रास्ता

وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ

वह बदल देगा	तुम रूगर्दानी करोगे	और अगर	मोहताज (जमा)	और तुम	बेनियाज़	और अल्लाह

ع ١٠ ٨ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْۤا اَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

38	तुम्हारे जैसे	वह न होंगे	फिर	दूसरी क़ौम तुम्हारे सिवा

और अगर हम चाहें तो तुम्हें उन लोगों को दिखा दें, सो अलबत्ता तुम उन्हें उन के चेहरों से पहचान लोगे, और तुम ज़रूर उन्हें उन के तरज़े कलाम से पहचान लोगे, और अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता है। (30) और हम ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे यहां तक हम मालूम कर लें कि (कौन हैं) तुम में से मुजाहिद और सब्र करने वाले और हम जाँच लें तुम्हारे हालात। (31) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, और उन्हों ने रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की उस के बाद जब कि उन पर हिदायत वाज़ेह हो गई, वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे और वह (अल्लाह) जल्द उन के आमाल अकारत कर देगा। (32) ऐ मोमिनो! अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल (स) की इताअ़त करो, और अपने आमाल बातिल न करलो। (33) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, फिर वह काफ़िर (कुफ़्र की हालत में) मर गए तो अल्लाह हरगिज़ न बख़्शेगा उन को। (34) पस तुम सुस्ती (कम हिम्मती) न करो और (ख़ुद) सुलह की तरफ़ न बुलाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह हरगिज़ कमी न करेगा तुम्हारे आमाल में। (35) इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी (महज़) खेल कूद है, और तुम अगर ईमान ले आओ और तक़्वा इख़्तियार करो तो वह तुम्हें तुम्हारे अजर देगा, और तुम से तुम्हारे माल तलब न करेगा। (36) अगर वह तुम से माल तलब करे और तुम से चिमट जाए (तलब ही करता रहे) तो तुम बुख़्ल करो, और ज़ाहिर हो जाएं तुम्हारे खोट। (37) हाँ! तुम ही वह लोग हो जिन्हें पुकारा जाता है कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करो, फिर तुम में से कोई ऐसा है जो बुख़्ल करता है, और जो बुख़्ल करता है तो इस के सिवा नहीं कि वह अपने आप से बुख़्ल करता है, और अल्लाह बेनियाज़ है और तुम (उस के) मोहताज हो और अगर तुम रूगर्दानी करोगे तो वह तुम्हारे सिवा (तुम्हारी जगह) कोई दूसरी क़ौम बदल देगा और वह तुम्हारे जैसे न होंगे। (38)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बेशक हम ने आप (स) को खुली फ़तह दी, **(1)** ताकि अल्लाह आप (स) की अगली पिछली कोताहियों को बख़्शदे, और आप (स) पर अपनी नेमत मुकम्मल कर दे, और आप (स) को सीधे रास्ते की रहनुमाई करे। **(2)** और अल्लाह आप (स) को नुस्रत दे, एक नुस्रत (मदद) ज़बरदस्त। **(3)** वही है जिस ने मोमिनों के दिल में तसल्ली उतारी, ताकि वह (उन का) ईमान बढ़ाए उन के (पहले) ईमान के साथ, और आस्मानों और ज़मीन के लशकर अल्लाह ही के हैं, और है अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला। **(4)** ताकि वह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को उन बाग़ात में दाख़िल कर दे जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे और उन से उन की बुराइयां दूर कर देगा, और यह अल्लाह के नज़्दीक बड़ी कामयाबी है। **(5)** और वह अ़ज़ाब देगा मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों को, और अल्लाह के साथ बुरे गुमान करने वाले मुश्‌रिक मर्दों और मुश्‌रिक औ़रतों को, उन पर बुरी गर्दिश है। और अल्लाह ने उन पर ग़ज़ब किया, और उन पर लानत की (रहमत से महरूम कर दिया) और उन के लिए जहन्नम तैयार किया, और वह बुरा ठिकाना है। **(6)** और अल्लाह ही के लिए हैं आस्मानों और ज़मीन के लशकर, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। **(7)** बेशक हम ने आप (स) को भेजा है गवाही देने वाला, और ख़ुशख़बरी देने वाला, और डराने वाला। **(8)** ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर ईमान लाओ, और उस की मदद करो और उस की ताज़ीम करो, और अल्लाह की तस्बीह (पाकीज़गी बयान) करो सुबह ओ शाम। **(9)**

آيَاتُهَا ٢٩ ❀ (٤٨) سُوْرَةُ الْفَتْحِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकुआ़त 4 — (48) सूरतुल फ़तह — जीत — आयात 29

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِنَّا فَتَحۡنَا لَـكَ فَتۡحًا مُّبِيۡنًا ۙ﴿۱﴾ لِّيَغۡفِرَ لَـكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنۡ ذَنۡۢبِكَ

आप (स) के कुसूर	से	जो पहले गुज़रे	अल्लाह	आप के लिए	ताकि बख़्शदे	1	खुली	फ़तह	आप (स) को	बेशक हम ने फ़तह दी

وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعۡمَتَهٗ عَلَيۡكَ وَيَهۡدِيَكَ صِرَاطًا مُّسۡتَقِيۡمًا ۙ﴿۲﴾

2	सीधा	रास्ता	और आप (स) की रहनुमाई करे	आप (स) पर	अपनी नेमत	और वह मुकम्मल करदे	और जो पीछे हुए

وَّيَنۡصُرَكَ اللّٰهُ نَصۡرًا عَزِيۡزًا ﴿۳﴾ هُوَ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ السَّكِيۡنَةَ فِىۡ

में	सकीना (तसल्ली)	उतारी	वह जिस	वही	3	ज़बरदस्त	नुस्रत	और आप (स) को नुस्रत दे अल्लाह

قُلُوۡبِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ لِيَزۡدَادُوۡۤا اِيۡمَانًا مَّعَ اِيۡمَانِهِمۡ ؕ وَلِلّٰهِ جُنُوۡدُ

और अल्लाह के लिए लशकर (जमा)	उन का ईमान	साथ	ईमान	ताकि वह बढ़ाए	मोमिनों	दिल (जमा)

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيۡمًا حَكِيۡمًا ۙ﴿۴﴾ لِّيُدۡخِلَ

ताकि वह दाख़िल करे	4	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	और ज़मीन	आस्मानों

الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ

वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	जारी हैं	जन्नत	और मोमिन औरतें	मोमिन मर्दों

فِيۡهَا وَيُكَفِّرَ عَنۡهُمۡ سَيِّاٰتِهِمۡ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنۡدَ اللّٰهِ فَوۡزًا عَظِيۡمًا ۙ﴿۵﴾

5	बड़ी कामयाबी	अल्लाह के नज़्दीक	यह	और है	उन की बुराइयां	उन से	और दूर कर देगा	उन में

وَّيُعَذِّبَ الۡمُنٰفِقِيۡنَ وَالۡمُنٰفِقٰتِ وَالۡمُشۡرِكِيۡنَ وَالۡمُشۡرِكٰتِ

और मुश्‌रिक औरतों	और मुश्‌रिक मर्दों	और मुनाफ़िक़ औरतों	मुनाफ़िक़ मर्दों	और वह अ़ज़ाब देगा

الظَّآنِّيۡنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوۡءِ ؕ عَلَيۡهِمۡ دَآئِرَةُ السَّوۡءِ ۚ

बुरी	दायरा (गर्दिश)	उन पर	गुमान बुरे	अल्लाह के साथ	गुमान करने वाले

وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ وَلَعَنَهُمۡ وَاَعَدَّ لَهُمۡ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتۡ مَصِيۡرًا ﴿۶﴾

6	ठिकाना	और बुरा है	जहन्नम	और तैयार किया उन के लिए	और उन पर लानत की	उन पर	और अल्लाह का ग़ज़ब

وَلِلّٰهِ جُنُوۡدُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيۡزًا حَكِيۡمًا ﴿۷﴾

7	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	और ज़मीन	और अल्लाह के लिए लशकर आस्मानों के

اِنَّـاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًا ۙ﴿۸﴾ لِّتُؤۡمِنُوۡا بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	ताकि तुम ईमान लाओ	8	और डराने वाला	और ख़ुशख़बरी देने वाला	गवाही देने वाला	बेशक हम ने आप (स) को भेजा

وَرَسُوۡلِهٖ وَتُعَزِّرُوۡهُ وَتُوَقِّرُوۡهُ ؕ وَتُسَبِّحُوۡهُ بُكۡرَةً وَّاَصِيۡلًا ﴿۹﴾

9	और शाम	सुबह	और उस (अल्लाह) की तस्बीह करो	और उस की ताज़ीम करो	और उस की मदद करो	और उस का रसूल (स)

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ۭ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ

उन के हाथों के ऊपर	अल्लाह का हाथ	वह अल्लाह से बैअ़त कर रहे हैं	इस के सिवा नहीं कि	आप से बैअ़त कर रहे हैं	बेशक जो लोग

فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ

अल्लाह पर-से	जो उस ने अ़हद किया	पूरा किया	और जिस	अपनी ज़ात पर	उस ने तोड़ दिया	तो इस के सिवा नहीं	फिर जिस ने तोड़ दिया अ़हद

ع ١/١٠ ٩ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝١٠ سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ

से	पीछे रह जाने वाले	आप (स) से	अब कहेंगे	10	अजरे अ़ज़ीम	तो वह अ़नक़रीब उसे देगा

الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ

वह कहते हैं	और बख़्शिश मांगिए हमारे लिए	और हमारे घर वाले	हमारे मालों	हमें मशग़ूल रखा	देहाती

بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ

अल्लाह के सामने	तुम्हारे लिए	इख़्तियार रखता है	तो कौन	फ़रमा दें	उन के दिलों में	जो नहीं	अपनी ज़बानों से

شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۭ بَلْ كَانَ اللّٰهُ

है अल्लाह	बल्कि	कोई फ़ाइदा	चाहे तुम्हें	या	कोई नुक़्सान	तुम्हें	अगर वह चाहे	किसी चीज़ का

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝١١ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ

और मोमिन (जमा)	रसूल (स)	हरगिज़ वापस न लौटेंगे	कि	तुम ने गुमान किया	बल्कि	11	ख़बरदार	उस से जो तुम करते हो

اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ

बुरा गुमान	और तुम ने गुमान किया	तुम्हारे दिलों में-को	यह	और भली लगी	कभी	अपने अहले ख़ाना	तरफ़

وَكُنْتُمْ قَوْمًۢا بُوْرًا ۝١٢ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और उस का रसूल	अल्लाह पर	ईमान नहीं लाता	और जो	12	हलाक होने वाली क़ौम	और तुम थे-हो गए

فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ۝١٣ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ

और ज़मीन	और अल्लाह के लिए आस्मानों की बादशाहत	13	दहकती आग	काफ़िरों के लिए	तो बेशक हम ने तैयार की

يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١٤

14	मेह्रबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	जिस को वह चाहे	और अ़ज़ाब दे	जिस को वह चाहे	वह बख़्शदे

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا

कि तुम उन्हें ले लो	ग़नीमतों की तरफ़	तुम चलोगे	जब	पीछे बैठ रहने वाले	अ़नक़रीब कहेंगे

ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۭ قُلْ

फ़रमा दें	अल्लाह का फ़रमान	कि वह बदल डालें	वह चाहते हैं	हम तुम्हारे पीछे चलें	हमें छोड़ दो (इजाज़त दो)

لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ

फिर अब वह कहेंगे	इस से क़ब्ल	कहा अल्लाह ने	इसी तरह	तुम हरगिज़ हमारे पीछे न आओ

بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۭ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝١٥

15	मगर थोड़ा	वह समझते नहीं हैं	बल्कि-जबकि	तुम हसद करते हो हम से	बल्कि

बेशक (हुदैबिया में) जो लोग आप (स) से बैअ़त कर रहे हैं इस के सिवा नहीं कि वह अल्लाह से बैअ़त कर रहे हैं, उन के हाथों पर अल्लाह का हाथ है, फिर जिस ने अ़हद तोड़ दिया तो इस के सिवा नहीं कि उस ने अपनी ज़ात (के बुरे) को तोड़ा, और जिस ने वह अ़हद पूरा किया जो उस ने अल्लाह से किया था तो वह (अल्लाह) उसे अ़नक़रीब देगा अजरे अ़ज़ीम। **(10)**
अब पीछे रह जाने वाले देहाती आप (स) से कहेंगे कि हमें हमारे मालों और हमारे घर वालों ने मशग़ूल रखा (रुख़सत न दी) सो आप (स) हमारे लिए बख़्शिश मांगिए, वह अपनी ज़बानों से वह कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए अल्लाह के सामने कौन इख़्तियार रखता है किसी चीज़ का? अगर वह तुम्हें नुक़्सान (पहुँचाना) चाहे या तुम्हें नफ़ा (पहुँचाना) चाहे, बल्कि तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उस से ख़बरदार है। **(11)**
बल्कि तुम ने गुमान (बातिल) किया कि रसूल (स) और मोमिन हरगिज़ अपने अहले ख़ाना की तरफ़ कभी वापस न लौटेंगे, और यह बात भली लगी तुम्हारे दिलों को, और तुम ने गुमान किया एक बुरा गुमान, और तुम हलाक होने वाली क़ौम हो गए। **(12)**
और जो ईमान नहीं लाता अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर, तो बेशक हम ने काफ़िरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। **(13)**
और अल्लाह (ही) के लिए है आस्मानों की और ज़मीन की बादशाहत, वह जिस को चाहे बख़्श दे और जिस को चाहे अ़ज़ाब दे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है। **(14)**
अ़नक़रीब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले: जब तुम चलोगे (ख़ैबर की) ग़नीमतों की तरफ़ कि तुम उन्हें लेलो, हमें इजाज़त दो कि हम तुम्हारे पीछे चलें, वह चाहते हैं कि अल्लाह का फ़रमान बदल डालें, आप (स) फ़रमा दें: तुम हरगिज़ हमारे पीछे न आओ, इसी तरह कहा अल्लाह ने इस से क़ब्ल, फिर अब वह कहेंगे: बल्कि तुम हम से हसद करते हो जबकि (हक़ीक़त यह है) कि वह बहुत थोड़ा समझते हैं। **(15)**

आप (स) देहातियों में से पीछे रह जाने वालों से फ़रमा दें: अनक़रीब तुम एक सख़्त जंगजू क़ौम की तरफ़ बुलाए जाओगे कि तुम उन से लड़ते रहो या वह इस्लाम कुबूल कर लें, सो अगर तुम इताअत करोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अजर देगा, और अगर तुम फिर गए जैसे तुम इस से क़ब्ल फिर गए थे तो वह तुम्हें अज़ाब देगा अज़ाब दर्दनाक। (16)

नहीं है अँधे पर कोई गुनाह, और नहीं है लंगड़े पर कोई गुनाह, और न बीमार पर कोई गुनाह, और जो अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करेगा वह उसे उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, और जो फिर जाएगा वह उसे दर्दनाक अज़ाब देगा। (17)

तहक़ीक़ अल्लाह मोमिनों से राज़ी हुआ जब वह आप (स) से बैअत कर रहे थे दरख़्त के नीचे, सो उस ने मालूम कर लिया जो उन के दिलों में (ख़ुलूस था) तो उस ने उन पर तसल्ली उतारी, और बदले में उन्हें क़रीब ही एक फ़तह अता की। (18)

और बहुत सी ग़नीमतें उन्हों ने हासिल कीं, और है अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला। (19)

और अल्लाह ने तुम से वादा किया नेमतों का, कसरत से जिन्हें तुम लोगे, पस उस ने यह तुम्हें जल्द दे दी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए, और ताकि (यह) हो मोमिनों के लिए एक निशानी, और तुम्हें सीधे रास्ते की हिदायत दे। (20)

और एक और फ़तह भी, तुम ने (अभी) उस पर क़ाबू नहीं पाया। घेर रखा है अल्लाह ने उस को, और अल्लाह है हर शै पर क़ुदरत रखने वाला। (21)

और अगर तुम से काफ़िर लड़ते तो वह पीठ फेरते, फिर वह न कोई दोस्त पाते और न कोई मददगार। (22)

अल्लाह का दस्तूर है जो इस से क़ब्ल गुज़र चुका है (चला आ रहा है) और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे। (23)

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِىْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ

सख़्त लड़ने वाली (जंगजू)	एक क़ौम की तरफ़	अनक़रीब तुम बुलाए जाओगे	देहातियों	से	पीछे बैठ रहने वालों को	फ़रमा दें

تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا

अजर	तुम्हें देगा अल्लाह	तुम इताअत करोगे	अगर	या वह इस्लाम कुबूल कर लें	तुम उन से लड़ते रहो

حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦﴾

16	दर्दनाक	अज़ाब	वह तुम्हें अज़ाब देगा	इस से क़ब्ल	जैसे तुम फिर गए थे	तुम फिर गए	और अगर	अच्छा

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ

मरीज़ पर	और न	कोई गुनाह	लंगड़े पर	और नहीं	कोई तंगी (गुनाह)	अँधे पर	नहीं

حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	वह दाख़िल करेगा उसे	और उस के रसूल की	इताअत करेगा अल्लाह की	और जो	कोई गुनाह

الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٧﴾ ع لَقَدْ رَضِىَ اللّٰهُ النصف ع ٢ ١٠

तहक़ीक़ राज़ी हुआ अल्लाह	17	अज़ाब दर्दनाक	वह अज़ाब देगा उसे	फिर जाएगा	और जो	नहरें

عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِىْ قُلُوْبِهِمْ

जो उन के दिलों में	सो उस ने मालूम कर लिया	दरख़्त	नीचे	वह आप (स) से बैअत कर रहे थे	जब	मोमिनों से

فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿١٨﴾ لا وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً

बहुत सी	और ग़नीमतें	18	एक फ़तह क़रीब	और बदले में दी उन्हें	उन पर	सकीना (तसल्ली)	तो उस ने उतारी

يَّاْخُذُوْنَهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٩﴾ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ

ग़नीमतें	वादा किया अल्लाह ने	19	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	उन्हों ने वह हासिल कीं

كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِىَ النَّاسِ

लोग	हाथ	और रोक दिए	यह	तुम्हें	तो जल्द दे दी उस ने	तुम लोगे उन्हें	कसरत से

عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢٠﴾ لا

20	सीधा	रास्ता	और वह हिदायत दे तुम्हें	मोमिनों के लिए	एक निशानी	और ताकि हो	तुम से

وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ

और है अल्लाह	उस को	घेर रखा है अल्लाह	उस पर	तुम ने क़ाबू नहीं पाया	और एक और (फ़तह)

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا

अलबत्ता वह फेरते	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तुम से लड़ते	और अगर	21	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर

الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِىْ

वह जो	अल्लाह का दस्तूर	22	और न कोई मददगार	कोई दोस्त	वह न पाते	फिर	पीठ (जमा)

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾

23	कोई तबदीली	अल्लाह के दस्तूर में	और तुम हरगिज़ न पाओगे	इस से क़ब्ल	गुज़र चुका

وَهُوَ الَّذِىْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ

दरमियान (वादी-ए) मक्का में	उन से	और तुम्हारे हाथ	तुम से	उन के हाथ	जिस ने रोका	और वह

مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿٢٤﴾

24	देखने वाला	तुम जो कुछ करते हो उसे	और है अल्लाह	उन पर	कि फ़तह मन्द किया तुम्हें	उस के बाद

هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْىَ

और क़ुर्बानी के जानवर	मस्जिदे हराम	से	और तुम्हें रोका	जिन्हों ने कुफ़्र किया	वह-यह

مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَلَوْ لَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ

और मोमिन औरतें	मोमिन (जमा)	मर्द	और अगर न	अपना मुक़ाम	कि वह पहुँचे	रुके हुए

لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ

नादानिस्ता	सदमा-नुक़सान	उन से	पस तुम्हें पहुँच जाता	तुम उनको पामाल करदेते	कि	तुम नहीं जानते उन्हें

لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِىْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ

उन लोगों को	अलबत्ता हम अज़ाब देते	अगर वह जुदा हो जाते	जिसे वह चाहे	अपनी रहमत में	ताकि दाख़िल करे अल्लाह

كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	की	जब	25	दर्दनाक	अज़ाब	उन में से	जो काफ़िर हुए

فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ

अपनी तसल्ली	तो अल्लाह ने उतारी	ज़मानाए जाहिलियत	ज़िद	ज़िद	अपने दिलों में

عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى

तक़वे की बात	और उन पर लाज़िम फ़रमा दिया	और मोमिनों पर	अपने रसूल (स) पर

ع ٣ ٩ ١١ وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمًا ﴿٢٦﴾ ع

26	जानने वाला	हर शै का	और है अल्लाह	और उस के अहल	ज़ियादा हक़दार उस के	और वह थे

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ

मस्जिदे हराम	अलबत्ता तुम ज़रूर दाख़िल होगे	हक़ीक़त के मुताबिक़	ख़ाब	अपने रसूल (स) को	सच्चा दिखाया अल्लाह ने	यक़ीनन

اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ

और (बाल) कटवाओगे	अपने सर	मुंडवाओगे	अम्न ओ अमान के साथ	अल्लाह ने चाहा	अगर

لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ

इस	उस से वरे (पहले)	पस कर दी उस ने	जो तुम नहीं जानते	पस उस ने मालूम कर लिया	तुम्हें कोई ख़ौफ़ न होगा

فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾ هُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ

हक़	और दीन	हिदायत के साथ	अपना रसूल (स)	जिस ने भेजा	वह	27	एक क़रीबी फ़तह

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾

28	गवाह	अल्लाह	और काफ़ी है	तमाम	दीन	पर	ताकि उसे ग़ालिब कर दे

और वही है जिस ने वादीए मक्का में उन के हाथ तुम से रोके और तुम्हारे हाथ उन से, उस के बाद कि तुम्हें उन पर फ़तह मन्द किया, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे है देखने वाला। (24)

यह वह लोग हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका, और रुके हुए क़ुरबानी के जानवरों को उन के मुक़ाम पर पहुँचने से रोका, और (हम तुम्हें क़िताल की इजाज़त देते) अगर (शहरे मक्का में) ऐसे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें न होते जिन्हें तुम नहीं जानते कि तुम उन्हें पामाल कर देते, पस उन से तुम्हें पहुँच जाता सदमा (नुक़सान) नादानिस्ता। (ताख़ीर इस लिए हुई) ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करे, अगर वह जुदा हो जाते तो हम अज़ाब देते उन में से काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब। (25)

जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की, ज़िद (हट) ज़मानाए जाहिलियत की तो अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर और मोमिनों पर अपनी तसल्ली उतारी और उन्हें लाज़िम फ़रमाया (क़ाइम रखा) तक़वे की बात पर, और वही उस के ज़ियादा हक़दार और उस के अहल थे, और अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (26)

यक़ीनन अल्लाह ने अपने रसूल (स) को सच्चा ख़ाब हक़ीक़त के मुताबिक़ दिखाया कि अल्लाह ने चाहा तो तुम ज़रूर मस्जिदे हराम में दाख़िल होगे अम्न ओ अमान के साथ, अपने सर मुंडवाओगे और बाल कटवाओगे, तुम्हें कोई ख़ौफ़ न होगा, पस उस ने मालूम कर लिया जो तुम नहीं जानते थे, पस उस ने कर दी उस (फ़त्हे मक्का) से पहले ही एक क़रीबी फ़तह। (27)

वही है जिस ने अपने रसूल (स) को भेजा हिदायत और दीने हक़ के साथ ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, और अल्लाह की गवाही काफ़ी है। (28)

मुहम्मद (स) अल्लाह के रसूल हैं, और जो लोग उन के साथ हैं वह काफ़िरों पर बड़े सख़्त हैं, आपस में रहम दिल हैं, तू उन्हें देखेगा रुकूअ़ करते, सिजदा रेज़ होते, वह तलाश करते हैं अल्लाह का फ़ज़्ल और (उस की) रज़ा मन्दी, उन की अ़लामत उन के चेहरों पर सिज्दों के असर (निशानात) हैं, यह उन की सिफ़त तौरेत में (मज़्कूर) है और उन की यह सिफ़त इन्जील में है, जैसे एक खेती, उस ने अपनी सुई निकाली, फिर उसे क़वी किया, फिर वह मोटी हुई, फिर वह अपनी नाल पर खड़ी हो गई, वह किसानों को भली लगती है ताकि उन काफ़िरों को गुस्से में लाए (उन के दिल जलाए), अल्लाह ने वादा किया है उन से जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, मग़्फ़िरत और अजरे अ़ज़ीम का। **(29)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ मोमिनो! अल्लाह और उस के रसूल (स) के आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। **(1)** ऐ मोमिनो! नबी (स) की आवाज़ पर तुम अपनी आवाज़ें ऊँची न करो, और उन के सामने ज़ोर से न बोलो, जैसे तुम एक दूसरे से बुलन्द आवाज़ में गुफ़्तगू करते हो, कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत (न) हो जाएं और तुम्हें ख़बर भी न हो। **(2)** बेशक जो लोग अल्लाह के रसूल (स) के नज़्दीक (सामने) अपनी आवाज़ें पस्त रखते हैं, यह वह लोग हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए आज़माया है, उन के लिए मग़्फ़िरत और अजरे अ़ज़ीम है। **(3)** बेशक जो लोग आप (स) को पुकारते हैं हुजरों के बाहर से, उन में से अक्सर अ़क़्ल नहीं रखते। **(4)**

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ

आपस में	रहम दिल	काफ़िरों पर	बड़े सख़्त	उन के साथ	और जो लोग	अल्लाह के रसूल	मुहम्मद (स)

تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ

उन की अ़लामत	और रज़ा मन्दी	अल्लाह से-का	फ़ज़्ल	वह तलाश करते हैं	सिजदा रेज़ होते	रुकूअ़ करते	तू उन्हें देखेगा

فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۖۛ وَمَثَلُهُمْ معانقة ١٥ عدد المتأخرين ١٢

और उन की मिसाल (सिफ़त)	तौरेत में	उन की मिसाल (सिफ़त)	यह	सिजदों का असर	से	उन के चेहरों में-पर

فِي الْاِنْجِيْلِ ۚۛ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى

फिर वह खड़ी हो गई	फिर वह मोटी हुई	फिर उसे क़वी किया	अपनी सुई	उस ने निकाली	जैसे एक खेती	इन्जील में

عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

उन से जो	वादा किया अल्लाह ने	काफ़िरों	उन से	ताकि गुस्से में लाए	किसान (जमा)	वह भली लगती है	अपनी जड़ (नाल) पर

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾ ع ٣ ١٢

29	अ़ज़ीम	और अजर	मग़्फ़िरत	उन में से	और उन्हों ने आमाल किए अच्छे	ईमान लाए

رُكُوْعَاتُهَا ٢ ❀ سُوْرَةُ الْحُجُرَاتِ (٤٩) ❀ آيَاتُهَا ١٨

रुकूआत 2 — (49) सूरतुल हुजुरात — कमरे — आयात 18

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और उस का रसूल (स)	अल्लाह के सामने-आगे	न आगे बढ़ो तुम	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا

न ऊँची करो	मोमिनो	ऐ	1	जानने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह	और डरो अल्लाह से

اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ

जैसे बुलन्द आवाज़	गुफ़्तगू में	उस के सामने	और न ज़ोर से बोलो	नबी (स) की आवाज़	ऊपर-पर	अपनी आवाज़ें

بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٢﴾ اِنَّ

बेशक	2	न जानते (ख़बर भी न) हो	और तुम	तुम्हारे अ़मल	अकारत हो जाएं	कहीं	बाज़ (दूसरे) से	तुम्हारे बाज़ (एक)

الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

जो-जिन	यह वह लोग	अल्लाह का रसूल (स)	नज़्दीक	अपनी आवाज़ें	पस्त रखते हैं	जो लोग

امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٣﴾ اِنَّ

बेशक	3	अ़ज़ीम	और अजर	मग़्फ़िरत	उन के लिए	परहेज़गारी के लिए	उन के दिल	आज़माया है अल्लाह ने

الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤﴾

4	अ़क़्ल नहीं रखते	उन में से अक्सर	हुजरों	बाहर से	आप (स) को पुकारते हैं	जो लोग

وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और अल्लाह	उन के लिए	बेहतर	अलबत्ता होता	उन के पास	आप (स) निकल आते	यहां तक कि	सब्र करते	अलबत्ता वह	और अगर

رَّحِيْمٌ ﴿٥﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْۤا اَنْ

कहीं	तो ख़ूब तहक़ीक़ कर लिया करो	ख़बर ले कर	कोई फ़ासिक़ बद किर्दार	आए तुम्हारे पास	अगर	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	5	मेह्रबान

تُصِيْبُوْا قَوْمًاۢ بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ﴿٦﴾ وَاعْلَمُوْۤا

और जान रखो	6	नादिम (जमा)	जो तुम ने किया (अपना किया)	पर	फिर हो तुम	नादानी से	किसी क़ौम को	तुम ज़रर पहुँचाओ

اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِىْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ

अलबत्ता तुम मुशकिल में पड़ो	कामों से-में	अक्सर	में	अगर वह तुम्हारा कहा मानें	अल्लाह का रसूल (स)	तुम्हारे दरमियान	कि

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِىْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ

तुम्हारे सामने	और नापसंदीदा कर दिया	तुम्हारे दिलों में	और उसे आरास्ता कर दिया	ईमान की	तुम्हें	मुहब्बत दी	और लेकिन अल्लाह

الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ﴿٧﴾ فَضْلًا

फ़ज़्ल	7	हिदायत पाने वाले	वह	यही लोग	और नाफ़रमानी	और गुनाह	कुफ़्र

مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٨﴾ وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ

से-के	दो गिरोह	और अगर	8	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	और नेमत	अल्लाह से-के

الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا

उन दोनों में से एक	फिर अगर ज़ियादती करे	उन दोनों के दरमियान	तो सुलह करा दो तुम	बाहम लड़ पड़ें	मोमिन (जमा)

عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِىْ تَبْغِىْ حَتّٰى تَفِىْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ

फिर अगर जब वह रुजूअ कर ले	हुक्मे इलाही	तरफ़	रुजूअ करे	यहां तक कि	ज़ियादती करता है	उस से जो	तो तुम लड़ो	दूसरे पर

فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٩﴾

9	इंसाफ़ करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	और तुम इंसाफ़ किया करो	अ़दल के साथ	उन दोनों के दरमियान	तो सुलह करा दो तुम

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम पर	और डरो अल्लाह से	अपने भाई	दरमियान	पस सुलह करा दो	भाई	मोमिन (जमा)	इस के सिवा नहीं

ع ١٠ الثلثة ١٣

تُرْحَمُوْنَ ﴿١٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى

क्या अ़जब	(दूसरे) गिरोह का	एक गिरोह	न मज़ाक़ उड़ाए	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	10	रहम किया जाए

اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا

बेहतर	कि वह हों	क्या अ़जब	औरतों से-का	और न औरतें	उन से	बेहतर	कि वह हों

مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ

बुरा नाम	बुरे अल्क़ाब से	और बाहम न चिड़ाओ	बाहम (एक दूसरे)	और न ऐब लगाओ	उन से

الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١١﴾

11	वह ज़ालिम (जमा)	तो यही लोग	तौबा न की (बाज़ न आया)	और जो-जिस	ईमान के बाद	फ़िस्क़

और अगर वह सब्र करते यहां
तक कि आप (स) (ख़ुद) उन के
पास निकल आते तो उन के लिए
अल्बत्ता बेहतर होता, और अल्लाह
बख़्शने वाला मेह्रबान है। (5)
ऐ मोमिनो! अगर तुम्हारे पास
कोई बदकार आए ख़बर ले कर
तो ख़ूब तहक़ीक़ कर लिया करो,
कहीं नादानी से तुम किसी क़ौम को
ज़रर पहुँचा बैठो, फिर तुम्हें अपने
किए पर नादिम होना पड़े। (6)
और जान रखो कि तुम्हारे
दरमियान अल्लाह के रसूल (स) हैं,
अगर वह अक्सर कामों में तुम्हारा
कहा मानें तो तुम (ख़ुद ही)
मुशकिलात में पड़ जाओ, लेकिन
अल्लाह ने तुम्हें ईमान की मुहब्बत
दी और उसे तुम्हारे दिलों में
आरास्ता (पसंदीदा) कर दिया और
उस ने तुम्हारे सामने (दिलों में)
नापसंदीदा कर दिया कुफ़्र ओ फ़िस्क़
और नाफ़रमानी को, यही लोग
(राहे) हिदायत पाने वाले हैं। (7)
अल्लाह के तरफ़ से फ़ज़्ल और
नेमत, और अल्लाह है जानने
वाला, हिक्मत वाला। (8)
और अगर मोमिनों के दो गिरोह
बाहम लड़ पड़ें तो तुम उन दोनो
के दरमियान सुलह करा दो, फिर
अगर ज़ियादती करे उन दोनों में
से एक दूसरे पर, तो तुम उस से
लड़ो जो ज़ियादती करता है, यहां
तक कि वह अल्लाह के हुक्म की
तरफ़ रुजूअ कर ले, फिर जब वह
रुजूअ कर ले तो तुम उन दोनों के
दरमियान अ़दल के साथ सुलह
करा दो और तुम इंसाफ़ करो,
बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों
को दोस्त रखता है। (9)
इस के सिवा नहीं कि सब मोमिन
भाई (भाई) हैं, पस तुम अपने दो
भाइयों के दरमियान सुलह करा दो,
अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहम
किया जाए। (10)
ऐ मोमिनो! (तुम से) एक गिरोह
(मर्द) दूसरे गिरोह (मर्दों) का
मज़ाक़ न उड़ाएं, क्या अ़जब कि
वह उन से बेहतर हों और न औरतें
औरतों का (मज़ाक़) उड़ाएं, क्या
अ़जब कि वह उन से बेहतर हों,
और एक दूसरे पर ऐब न लगाओ,
और बाहम बुरे अल्क़ाब से न
चिड़ाओ (नाम न बिगाड़ो), ईमान
के बाद फ़िस्क़ में नाम कमाना
बुरा है, और जो बाज़ न आया तो
यही लोग ज़ालिम हैं। (11)

ऐ मोमिनो! बहुत से गुमानों से बचो, बेशक बाज़ गुमान गुनाह होते हैं और एक दूसरे की टटोल में न रहा करो, और तुम में से कोई एक दूसरे की ग़ीबत न करे, क्या पसंद करता है तुम में से कोई कि वह अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए? तो तुम उस से घिन करोगे, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, निहायत मेह्रबान है। (12)

ऐ लोगो! बेशक हम ने तुम्हें एक मर्द और एक औ़रत से पैदा किया, और हम ने तुम्हें बनाया ज़ातें और क़बीले ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो, बेशक अल्लाह के नज़्दीक तुम में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला वह है जो सब से ज़ियादा परहेज़गार है, अल्लाह बेशक जानने वाला, ख़बरदार है। (13)

देहाती कहते हैं कि हम ईमान ले आए, आप (स) फ़रमा दें: तुम ईमान नहीं लाए हो, बल्कि तुम कहो कि हम झुक गए हैं, और अभी दाख़िल नहीं हुआ तुम्हारे दिलों में ईमान, और अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करोगे तो अल्लाह तुम्हारे आमाल से कमी न करेगा कुछ भी, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। (14)

इस के सिवा नहीं कि मोमिन वह लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान लाए, फिर वह शक में न पड़े और उन्हों ने अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, यही लोग हैं सच्चे। (15)

आप (स) फ़रमा दें: क्या तुम अल्लाह को अपना दीन (दीनदारी) जतलाते हो? और अल्लाह जानता है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (16)

वह आप (स) पर एहसान रखते हैं कि वह इस्लाम लाए, आप (स) फ़रमा दें कि तुम मुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान न रखो, बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उस ने तुम्हें ईमान की तरफ़ हिदायत दी, अगर तुम सच्चे हो। (17)

बेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें जानता है, और अल्लाह वह (सब कुछ) देखने वाला है जो तुम करते हो। (18)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ

बाज़ गुमान	बेशक	गुमानों से	बहुत से	बचो	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ

कि वह खाए	तुम में से कोई	क्या पसंद करता है?	बाज़ (दूसरे) की	तुम में से (एक)	और ग़ीबत न करे	और टटोल में न रहा करो एक दूसरे की	गुनाह

لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲﴾

12	निहायत मेह्रबान	तौबा कुबूल करने वाला	बेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो तुम	तो उस से तुम घिन करोगे	मुर्दा	अपने भाई का गोश्त

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآىِٕلَ

और क़बीले	ज़ातें	और बनाया तुम्हें	और एक औ़रत	एक मर्द से	बेशक हम ने पैदा किया तुम्हें	ऐ लोगो!

لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۳﴾

13	बाख़बर	जानने वाला	बेशक अल्लाह	तुम में सब से बड़ा परहेज़गार	अल्लाह के नज़्दीक	बेशक तुम में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला	ताकि तुम एक दूसरे की शनाख़्त करो

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا

और अभी नहीं	हम इस्लाम लाए हैं	तुम कहो	और लेकिन	तुम ईमान नहीं लाए	फ़रमा दें	हम ईमान लाए	देहाती	कहते हैं

يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ

तुम्हें कमी न करेगा	अल्लाह और उस का रसूल (स)	तुम इताअ़त करोगे	और अगर	तुम्हारे दिलों में	ईमान	दाख़िल हुआ

مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	मोमिन (जमा)	इस के सिवा नहीं	14	मेह्रबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	कुछ भी	तुम्हारे आमाल	से

اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ

अपने मालों से	और उन्हों ने जिहाद किया	न पड़े शक में वह	फिर	और उस का रसूल (स)	अल्लाह पर	ईमान लाए

وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿۱۵﴾ قُلْ

फ़रमा दें	15	सच्चे	वह	यही लोग	अल्लाह की राह	में	और अपनी जानों से

اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो	आस्मानों में	जो	जानता है	और अल्लाह	अपना दीन	क्या तुम जतलाते हो अल्लाह को?

فِي الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۶﴾ يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ

वह इस्लाम लाए	कि	आप (स) पर	वह एहसान रखते हैं	16	जानने वाला	चीज़	हर एक	और अल्लाह	ज़मीन में

قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ

तुम पर	एहसान रखता है	बल्कि अल्लाह	अपने इस्लाम लाने का	मुझ पर	न एहसान रखो तुम	फ़रमा दें

اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ

वह जानता है	बेशक अल्लाह	17	सच्चे	तुम हो	अगर	ईमान की तरफ़	कि उस ने हिदायत दी तुम्हें

غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾ ع ۲ / ۸ / ۱۴

18	तुम करते हो	वह जो	देखने वाला	और अल्लाह	और ज़मीन	पोशीदा बातें आस्मानों की

المنزل ٧

آيَاتُهَا ٤٥ ❀ (٥٠) سُوْرَةُ قٓ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

आयात 45 (50) सूरह क़ाफ़ रुकूआत 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۝١ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ

काफ़	क़सम है क़ुरआन	मजीद	1	बल्कि	उन्हों ने तअज्जुब किया	कि	उन के पास आया	एक डर सुनाने वाला	उन में से

فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۝٢ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ

तो कहा	काफ़िरों	यह	शै	अजीब	2	क्या जब हम मर गए	और हो गए	मिट्टी

ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ۝٣ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا

यह	दोबारा लौटना	दूर	3	तहक़ीक़ हम जानते हैं	जो कुछ कम करती है	ज़मीन	उन में से	और हमारे पास

كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ۝٤ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ۝٥

महफ़ूज़ रखने वाली किताब	4	बल्कि उन्हों ने झुटलाया	हक़ को	जब वह आया उन के पास	पस वह	एक बात में	उलझी हुई	5

اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا

तो क्या वह नहीं देखते?	आस्मान की तरफ़	उन के ऊपर	कैसे	बनाया उस को	और उस को आरास्ता किया	और उस में नहीं

مِنْ فُرُوْجٍ ۝٦ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا

कोई	शिगाफ़	6	और ज़मीन	हम ने फैलाया	और डाले (जमाए)	उस में	पहाड़ (जमा)	और उगाए

فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝٧ تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝٨

उस में	से - के	हर क़िस्म	ख़ुशनुमा	7	ज़रीआए बीनाई	और नसीहत	लिए - हर	रुजूअ करने वाला बन्दा	8

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ۝٩

और हम ने उतारा	आस्मान से	पानी	बाबरकत	फिर हम ने उगाए	उस से	बाग़ात	और दाना (ग़ल्ला)	काटने (खेती)	9

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۝١٠ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ

और खजूर के दरख़्त	बुलन्द ओ बाला	जिन के	ख़ोशे	तह ब तह	10	रिज़्क़	बन्दों के लिए	और हम ने ज़िन्दा किया	उस से

بَلْدَةً مَّيْتًا ۭ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ۝١١ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ

शहर (ज़मीन)	मुर्दा	इसी तरह	निकलना	11	झुटलाया	इन से क़ब्ल	नूह (अ) की क़ौम

وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ۝١٢ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۝١٣

और अहले रस	और समूद	12	और आद	और फ़िरऔन	और भाई (जमा)	लूत (अ)	13

وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۭ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ۝١٤

और अहले अयका (बन के रहने वाले)	और क़ौमे तुब्बअ	सब ने झुटलाया	रसूलों	पस साबित हो गया	वादाए अज़ाब	14

ع ١٥ / ١٥

اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ۭ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝١٥

तो क्या हम थक गए	पैदा करने से	पहली बार	बल्कि वह	शक में	से	पैदा करना अज़ सरे नौ	15

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़ाफ़ - क़सम है क़ुरआन मजीद की। (1)

बल्कि उन्हों ने तअज्जुब किया कि उन के पास उन में से एक डर सुनाने वाला आया, तो काफ़िरों ने कहा कि यह अजीब शै है। (2)

क्या जब हम मर गए और मिट्टी हो गए (फिर जी उठेंगे?), यह दोबारा लौटना दूर (अज़ अक़्ल) है। (3)

तहक़ीक़ हम जानते हैं जो कुछ कम करती है उन (के अज्साम) में से ज़मीन और हमारे पास महफ़ूज़ रखने वाली किताब है। (4)

बल्कि उन्हों ने हक़ को झुटलाया जब वह उन के पास आया, पस वह एक उलझी हुई बात में (पड़े हैं)। (5)

तो क्या वह अपने ऊपर आस्मान की तरफ़ नहीं देखते? कि हम ने उस को कैसे बनाया! और हम ने उसको (सितारों से) आरास्ता किया और उस में कोई शिगाफ़ तक नहीं। (6)

और ज़मीन को हम ने फैलाया और उस में पहाड़ जमाए, और हम ने उस में उगाईं हर क़िस्म की ख़ुशनुमा (चीज़ें)। (7)

हर रुजूअ करने वाले बन्दे के लिए ज़रीआए बीनाई ओ नसीहत। (8)

और हम ने आस्मान से बाबरकत पानी उतारा, फिर हम ने उस से बाग़ात उगाए और खेती का ग़ल्ला। (9)

और बुलन्द ओ बाला खजूर के दरख़्त, जिन के तह ब तह (ख़ूब गुंधे हुए) ख़ोशे हैं। (10)

रिज़्क़ बन्दों के लिए और हम ने उस से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा किया, इसी तरह (क़ब्र से) निकलना होगा। (11)

इन से क़ब्ल झुटलाया नूह (अ) की क़ौम और अहले रस और समूद ने। (12)

आद और फ़िरऔन और लूत (अ) के भाइयों ने। (13)

और बन के रहने वालों ने और क़ौमे तुब्बअ ने, सब ने रसूलों को झुटलाया, पस वादाए अज़ाब साबित हो गया। (14)

तो क्या हम पहली बार पैदा करने से थक गए हैं? बल्कि वह दोबारा पैदा करने की (तरफ़) से शक में हैं। (15)

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۖۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ

बहुत क़रीब	और हम	उस का जी	उस के	जो वस्वसे गुज़रते हैं	और हम जानते हैं	इन्सान	और तहक़ीक़ हम ने पैदा किया

اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿۱۶﴾ اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ

दाएं से	दो (2) लेने (लिख लेने) वाले	जब लेते (लिख लेते) हैं	16	रगे गर्दन (शह रग)	से	उस के

وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ﴿۱۷﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿۱۸﴾

18	तैयार बैठा हुआ	एक निगहबान	उस के पास	मगर	कोई बात	और नहीं निकालता	17	बैठा हुआ	और बाएं से

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿۱۹﴾ وَنُفِخَ

और फूंका गया	19	भागता (बिदकता)	उस से	जिस से तू था	यह	हक़ के साथ	मौत की बेहोशी	और आ गई

فِى الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿۲۰﴾ وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ

एक चलाने वाला	उस के साथ	हर शख़्स	और आएगा (हाज़िर होगा)	20	वईद का दिन	यह	सूर में

وَّشَهِيْدٌ ﴿۲۱﴾ لَقَدْ كُنْتَ فِىْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ

तेरा पर्दा	तुझ से	तो हम ने हटा दिया	इस से	ग़फ़्लत में	तहक़ीक़ तू था	21	और गवाही देने वाला

فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿۲۲﴾ وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَىَّ عَتِيْدٌ ؕ ﴿۲۳﴾

23	हाज़िर	जो मेरे पास	यह	उस का हम नशीन	और कहेगा	22	बड़ी तेज़	आज	पस तेरी नज़र

اَلْقِيَا فِىْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿۲۴﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبٍ ﴿۲۵﴾

25	शुबहात डालने वाला	हद से गुज़रने वाला	माल के लिए	मना करने वाला	24	सरकश	हर नाशुक्रा	जहन्नम में	तुम दोनों डाल दो

الَّذِىْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِى الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ﴿۲۶﴾

26	सख़्त	अ़ज़ाब में	पस उसे डाल दो तुम	दूसरा	माबूद	अल्लाह के साथ	ठहराया	वह जिस

قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِىْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿۲۷﴾ قَالَ

फ़रमाएगा	27	परले दरजे की	गुमराही में	था	और लेकिन वह	मैं ने उसे सरकश नहीं बनाया	ऐ हमारे रब	उस का हम नशीन	कहेगा

لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَىَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ﴿۲۸﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ

बात	नहीं बदली जाती	28	वादा-ए-अ़ज़ाब	तुम्हारी तरफ़	और मैं पहले भेज चुका हूँ	मेरे पास-सामने	तुम न झगड़ो

لَدَىَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۲۹﴾ يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ — ع ۲ ۱۴ ۱۶

क्या तू भर गई?	जहन्नम से	हम कहेंगे	जिस दिन	29	बन्दों पर	ज़ुल्म करने वाला	और नहीं मैं	मेरे पास (हाँ)

وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ﴿۳۰﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ﴿۳۱﴾

31	दूर	न	परहेज़गारों के लिए	जन्नत	और नज़्दीक कर दी जाएगी	30	मज़ीद है	से-कुछ	क्या	और वह कहेगी

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ﴿۳۲﴾ مَنْ خَشِىَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ

बिन देखे	रहमान (अल्लाह)	डरा	जो	32	निगहदाश्त करने वाला	हर रुजूअ़ करने वाले के लिए	यह जो तुम से वादा किया जाता था

وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِۨ ﴿۳۳﴾ ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ﴿۳۴﴾

34	हमेशा रहने का दिन	यह	सलामती के साथ	तुम उस में दाख़िल हो जाओ	33	रुजूअ़ करने वाले दिल के साथ	और आया

और तहक़ीक़ हम ने इन्सान को पैदा किया और हम जानते हैं जो वस्वसे गुज़रते हैं उस के जी में, और हम उस की शह रग से (भी) ज़ियादा क़रीब हैं। (16)
जब (वह कोई काम करता है) तो लिखने वाले लिख लेते हैं (एक) दाएं से और (एक) बाएं से बैठा हुआ। (17)
और वह कोई बात (ज़बान से) नहीं निकालता मगर उस के पास (लिखने के लिए) एक निगहबान तैयार बैठा है। (18)
और हक़ के साथ मौत की बेहोशी आ गई, यह वह है जिस से तू बिदकता था। (19)
और सूर फूंका गया, यह वईद का दिन है। (20)
और हर शख़्स (हमारे हुज़ूर) हाज़िर होगा, उस के साथ एक चलाने वाला और एक गवाही देने वाला होगा। (21)
तहक़ीक़ तू इस से ग़फ़्लत में था, तो हम ने तुझ से तेरा (ग़फ़्लत का) पर्दा हटा दिया। पस तेरी नज़र आज बड़ी तेज़ है। (22)
और कहेगा उस का हम नशीन (फ़रिश्ता) जो मेरे पास (आमाल नामा था) यह हाज़िर है। (23)
(हुक्म होगा) तुम दोनों जहन्नम में डाल दो हर नाशुक्रे सरकश को, (24) भलाई को रोकने वाला, हद से गुज़रने वाला, शुबहात डालने वाला। (25)
जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद ठहराया, पस तुम उसे डाल दो सख़्त अ़ज़ाब में। (26)
उस का हम नशीन (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे रब! मैं ने उसे सरकश नहीं बनाया, बल्कि वह परले दरजे की गुमराही में था। (27)
(अल्लाह) फ़रमाएगाः तुम मेरे सामने न झगड़ो, और मैं तुम्हारी तरफ़ पहले वादाए अ़ज़ाब भेज चुका हूँ। (28)
मेरे पास बात नहीं बदली जाती और नहीं मैं ज़ुल्म करने वाला बन्दों पर। (29)
जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे कि क्या तू भर गई? और वह कहेगीः क्या कुछ (और) मज़ीद है? (30)
और जन्नत परहेज़गारों के नज़्दीक कर दी जाएगी, न होगी दूर। (31)
यह है जो तुम से वादा किया जाता था, हर रुजूअ़ करने वाले, निगहदाश्त करने वाले के लिए। (32)
जो अल्लाह रहमान से बिन देखे डरा, और रुजूअ़ करने वाले दिल के साथ आया। (33)
(हम फ़रमाएंगे) उस में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ, यह हमेशा रहने का दिन है। (34)

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٥﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ

इन से क़ब्ल	और कितनी हलाक कीं हम ने	35	और भी ज़ियादा	और हमारे पास	उस में	जो वह चाहेंगे	उन के लिए

مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِى الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٦﴾

36	भागने की जगह	से (कहीं)	क्या	पस कुरेदने (छान मारने) लगे शहरों में	पकड़ में	इन से	वह ज़ियादा सख़्त	उम्मतें

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ

और वह	डाले (लगाए) कान	या	दिल	उस का	हो	उस के लिए जो	नसीहत	इस	में	बेशक

شَهِيْدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ

छः (6) दिन में	और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	हम ने पैदा किया	और तहक़ीक़	37	मुतवज्जेह

وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ

और पाकीज़गी बयान करो	जो वह कहते हैं	पर	पस सब्र करो तुम	38	किसी तकान ने	और नहीं छुआ हमें

بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ﴿٣٩﴾ ج وَمِنَ الَّيْلِ

और रात में	39	और ग़ुरूब होने से क़ब्ल	सूरज का तुलूअ	क़ब्ल	अपने रब की तारीफ़ के साथ

فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿٤٠﴾ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ

से	पुकारने वाला पुकारेगा	जिस दिन	और सुनो तुम	40	सिज्दों (नमाज़)	और बाद	पस उसकी पाकीज़गी बयान करो

مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٤١﴾ لا يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٢﴾

42	बाहर निकलने का दिन	यह	हक़ के साथ	चीख़	वह सुनेंगे	जिस दिन	41	जगह क़रीब

اِنَّا نَحْنُ نُحْىٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾ لا يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ

उन से	ज़मीन	जिस दिन शक़ हो जाएगी	43	फिर लौट कर आना है	और हमारी तरफ़	और मारते हैं	ज़िन्दगी देते हैं	बेशक हम

سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ﴿٤٤﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ

वह कहते हैं	वह जो	हम ख़ूब जानते हैं	44	आसान	हमारे लिए	हश्र	यह	जल्दी करते हुए

٣ ع ١٦ ١٧ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۫ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾ ع

45	मेरी वईद	वह डरता है	जो	कुरआन से	पस नसीहत करें	जब्र करने वाले	उन पर	और नहीं आप (स)

آيَاتُهَا ٦٠ ❀ سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ (٥١) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3	(51) सूरतुज़ ज़ारियात बिखेरने वालियाँ	आयात 60

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿١﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿٢﴾ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿٣﴾ فَالْمُقَسِّمٰتِ

फिर तक़सीम करने वाले	3	नर्मी से	फिर चलने वाली	2	बोझ	फिर उठाने वाली	1	उड़ा कर	क़सम है परागन्दा करने वाली (हवाओं)

اَمْرًا ﴿٤﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ﴿٥﴾ وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾

6	अलबत्ता वाक़े होने वाली	जज़ा ओ सज़ा	और बेशक	5	अलबत्ता सच है	तुम्हें वादा दिया जाता है	इस के सिवा नहीं	4	हुक्म से

उस में उन के लिए है जो वह चाहेंगे और हमारे पास और भी ज़ियादा है। (35)
और हम ने इन (अहले मक्का) से क़ब्ल कितनी (ही) हलाक कीं उम्मतें, वह पकड़ (कुव्वत) में इन से ज़ियादा सख़्त थीं, पस उन्हों ने शहरों को छान मारा था, क्या कहीं भागने की जगह पा सके? (36)
बेशक उस में नसीहत (बड़ी इब्रत) है उस के लिए जिस का दिल (बेदार) हो, या कान लगाए, और वह मुतवज्जेह हो। (37)
और तहक़ीक़ हम ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और जो उन के दरमियान है, छः (6) दिन में, और हमें किसी तकान ने नहीं छुआ। (38)
पस जो वह कहते हैं तुम उस पर सब्र करो, और अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करो, सूरज के तुलूअ और ग़ुरूब से क़ब्ल। (39)
और रात में पस उस की पाकीज़गी बयान करो और नमाज़ों के बाद (भी)। (40)
और सुनो, जिस दिन पुकराने वाला क़रीब जगह से पुकारेगा। (41)
जिस दिन वह ठीक ठीक चीख़ सुनेंगे, यह (क़ब्रों से) बाहर निकलने का दिन होगा। (42)
बेशक हम ज़िन्दगी देते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी तरफ़ (ही) लौट कर आना है। (43)
जिस दिन ज़मीन शक़ हो जाएगी वह जल्दी करते हुए निकलेंगे, यह हश्र हमारे लिए आसान है। (44)
जो वह कहते हैं हम ख़ूब जानते हैं, और तुम उन पर जब्र करने वाले नहीं, पस आप (स) (उस को) कुरआन से नसीहत करें, जो मेरी वईद (वादाए अज़ाब) से डरता है। (45)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है (ख़ाक) उड़ा कर परागन्दा करने वाली हवाओं की, (1)
फिर (बारिश का) बोझ उठाने वाली हवाओं की, (2)
फिर नर्मी से चलने वाली (कश्तियों) की, (3)
फिर हुक्म से तक़सीम करने वाले (फ़रिश्तों) की, (4)
इस के सिवा नहीं कि तुम्हें वादा जो दिया जाता है अलबत्ता सच है। (5)
और बेशक जज़ा ओ सज़ा अलबत्ता वाक़े होने वाली है। (6)

और क़सम है रास्तों वाले आस्मान की। (7)
बेशक तुम अलबत्ता मुख़्तलिफ़ बात में हो। (8)
उस (क़ुरआन) से वही फेरा जाता है जो (अल्लाह की तरफ़ से) फेरा जाता है। (9)
अटकल दौड़ाने वाले मारे गए। (10)
जो वह ग़फ़्लत में भूले हुए हैं। (11)
वह पूछते हैं कि जज़ा ओ सज़ा का दिन कब होगा? (12)
(हाँ) उस दिन वह आग पर उलटे सीधे पड़ेंगे। (13)
(अब) तुम अपनी शरारत (का मज़ा) चखो, यह है वह जिस की तुम जल्दी करते थे। (14)
बेशक मुत्तक़ी बाग़ात और चश्मों में होंगे। (15)
लेने वाले जो दिया उन्हें उन का रब, बेशक वह इस से क़ब्ल नेकोकार थे। (16)
वह रात में थोड़ा सोते थे। (17)
और वक़्ते सुबह वह असतग़फ़ार करते (बख़्शिश मांगते) थे। (18)
और उन के मालों में हक़ है सवाली और ग़ैर सवाली (तंगदस्त) के लिए। (19)
और ज़मीन में यक़ीन करने वालों के लिए निशानियां हैं। (20)
और तुम्हारी ज़ात में (भी), तो क्या तुम देखते नहीं? (21)
और आस्मानों में तुम्हारा रिज़्क़ है और जो तुम से वादा किया जाता है। (22)
क़सम है रब की आस्मानों और ज़मीन के, बेशक यह (क़ुरआन) हक़ है जैसे तुम बोलते हो। (23)
क्या आप (स) के पास ख़बर आई इब्राहीम (अ) के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों की? (24)
जब वह उस के पास आए तो उन्हों ने "सलाम" कहा, उस (इब्राहीम अ) ने (भी) सलाम कहा, वह लोग नाशनासा थे। (25)
फिर वह अपने अहले ख़ाना की तरफ़ मुतवज्जेह हुए, फिर एक मोटा ताज़ा बछड़ा (के कबाब) ले आए। (26)
फिर उन के सामने रखा (और) कहाः क्या तुम खाते नहीं? (27)
तो उस (इब्राहीम अ) ने उन से (दिल में) डर महसूस किया, वह बोले कि तुम डरो नहीं, और उन्हों ने उसे एक दाशिमन्द बेटे की बशारत दी। (28)
फिर उस की बीवी आगे आई हैरत से बोलती हुई, उस ने अपने चेहरे पर (हाथ) मारा और बोलीः (मैं) बुढ़िया (और ऊपर से) बांझ। (29)
उन्हों ने कहाः ऐसे ही फ़रमाया है तेरे रब ने, बेशक वह हिक्मत वाला, जानने वाला। (30)

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۙ﴿۷﴾ اِنَّكُمْ لَفِیْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۙ﴿۸﴾ یُّؤْفَكُ عَنْهُ

उस से	फेरा जाता है	8	मुख़्तलिफ़	बात	अलबत्ता में	बेशक तुम	7	रास्तों वाले	और क़सम है आस्मान की

مَنْ اُفِكَ ؕ﴿۹﴾ قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ۙ﴿۱۱﴾

11	भूले हुए हैं	ग़फ़्लत में	वह	वह जो	10	अटकल दौड़ाने वाले	मारे गए	9	जो फेरा जाता है

یَسْـَٔلُوْنَ اَیَّانَ یَوْمُ الدِّیْنِ ؕ﴿۱۲﴾ یَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ یُفْتَنُوْنَ ﴿۱۳﴾ ذُوْقُوْا

तुम चखो	13	उलटे सीधे पड़ेंगे	आग पर	वह	उस दिन	12	जज़ा औ सज़ा का दिन	कब?	वह पूछते हैं

فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۱۴﴾ اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ جَنّٰتٍ

बाग़ात में	मुत्तक़ी (नेक चलन)	बेशक	14	जल्दी करते	तुम थे उस की	वह जो	यह	अपनी शरारत

وَّعُیُوْنٍ ۙ﴿۱۵﴾ اٰخِذِیْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ

इस	क़ब्ल	थे	बेशक वह	उन का रब	जो दिया उन्हें	लेने वाले	15	और चश्मे

مُحْسِنِیْنَ ؕ﴿۱۶﴾ كَانُوْا قَلِیْلًا مِّنَ الَّیْلِ مَا یَهْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ

वह	और वक़्ते सुबह	17	वह सोते	रात से-में	थोड़ा	वह थे	16	नेकोकार

یَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَفِیْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآىِٕلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿۱۹﴾

19	और तंगदस्त (ग़ैर सवाली)	सवाली के लिए	हक़	उन के माल (जमा)	और में	18	असतग़फ़ार करते

وَفِی الْاَرْضِ اٰیٰتٌ لِّلْمُوْقِنِیْنَ ۙ﴿۲۰﴾ وَفِیْۤ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَفِی

और में	21	तो क्या तुम देखते नहीं?	और तुम्हारी ज़ात में	20	यक़ीन करने वालों के लिए	निशानियां	और ज़मीन में

السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿۲۲﴾ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ

हक़ है	बेशक यह	और ज़मीन	आस्मानों	क़सम है रब की	22	और जो तुम से वादा किया जाता है	तुम्हारा रिज़्क़	आस्मानों

مِّثْلَ مَاۤ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿۲۳﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِیْثُ ضَیْفِ اِبْرٰهِیْمَ

इब्राहीम (अ)	मेहमान	बात (ख़बर)	आई तुम्हारे पास	क्या	23	बोलते हो	जो तुम	जैसे

ع ۲۳ ۱۸

الْمُكْرَمِیْنَ ۘ﴿۲۴﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَیْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿۲۵﴾

25	नाशनासा	लोग	सलाम	उस ने कहा	सलाम	तो उन्हों ने कहा	उस के पास	वह आए	जब	24	इज़्ज़तदार

وقف لازم

فَرَاغَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِیْنٍ ۙ﴿۲۶﴾ فَقَرَّبَهٗۤ اِلَیْهِمْ قَالَ

कहा	उन के	फिर वह सामने रखा	26	मोटा ताज़ा बछड़ा	पस लाया	अपने अहले ख़ाना की तरफ़	फिर वह मुतवज्जेह हुआ

اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِیْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ

एक बेटे की	और उन्हों ने बशारत दी	तुम डरो नहीं	वह बोले	कुछ डर	उन से	तो उस ने महसूस किया	27	क्या तुम खाते नहीं?

عَلِیْمٍ ﴿۲۸﴾ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِیْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ

बुढ़िया	और बोली	अपना चेहरा	उस ने हाथ मारा	हैरत से बोलती हुई	उस की बीवी	फिर आगे आई	28	दानिशमन्द

عَقِیْمٌ ﴿۲۹﴾ قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِیْمُ الْعَلِیْمُ ﴿۳۰﴾

30	जानने वाला	हिक्मत वाला	वह	बेशक	तेरा रब	फ़रमाया	यूँ ही	उन्हों ने कहा	29	बांझ